मनुष्य क्या है?

अध्याय 4

अनुग्रह की वाचा

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना..1
सनातन मनसा 2
समय 2
त्रीएक परमेश्वर...3
पूरा होना..5
विधि-विधान 6
पाप 7
मध्यस्थ...9
अवयव 12
दिव्य परोपकारिता 13
मनुष्य की वफादारी 14
परिणाम 18
प्रशासन 20
आदम 21
नूह 21
अब्राहम...22
मूसा...22
दाऊद..23
यीशु..23
उपसंहार...25

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

मनुष्य क्या है?

अध्याय चार

अनुग्रह की वाचा

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी में, चार्ल्स डिकंस ने एक उपन्यास अ टेल ऑफ टू सिटीज़ प्रकाशित किया। कहानी के अंत में एक जगह पर, नायक जेल में अपने प्राणदण्ड का इंतजार कर रहा है। लेकिन वह एक गुप्त साजिश के तहत बचाया जाता है जिसमें कुछ यूँ होता है कि एक अन्य व्यक्ति जो उसके जैसा दिखता है उसके साथ वह अदला बदली कर लेता है। कैदी को मुक्त कर दिया जाता है, और जो उसे मुक्त करता है वह स्वेच्छा से उसके स्थान पर मर जाता है। महत्वपूर्ण तरीकों से, यह दृश्य अनुग्रह की वाचा में विश्वासियों के अनुभवों से मेल खाता है। पाप में मानवता के पतन ने हम सभी को मृत्यु की सजा के अधीन कर दिया है। लेकिन अनुग्रह की वाचा में, यीशु हमारा मध्यस्थ और प्रतिनिधि बना। और उसने उस कार्य को करने में उस पद का उपयोग करा जिसे हम नहीं कर पाए थे। उसने हमारे स्थान में क्रूस पर मरने के द्वारा हमारी मृत्यु की सजा को अपने ऊपर ले लिया। और अपनी धार्मिकता के द्वारा, उसने परमेश्वर की वाचा सम्बंधित आशीषों को अर्जित किया, जिसे उसने हमारे साथ साझा किया। इस तरह, अपने पाप में मरने के बजाय, अब हम परमेश्वर के अनुग्रह के माध्यम से मसीह में जीवित हैं।

हमारी श्रृंखला मनुष्य क्या है? का यह चौथा अध्याय है — ईश्वरीय-ज्ञान वाले मानव-विज्ञान का पता लगाने वाली श्रृंखला। हमने इस अध्याय का शीर्षक रखा है "अनुग्रह की वाचा" क्योंकि हम अनुग्रहकारी वाचा वाले संबंध पर ध्यान-केंद्रित करेंगे जिसे परमेश्वर ने मानवता के साथ हमारे पाप में पतन के बाद स्थापित किया।

आदि में, परमेश्वर ने मानवता के साथ आदम के माध्यम से वाचा बाँधी, जिसे अक्सर "कार्यों की वाचा" के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह वाचा मानवता के लिए जीवन दे सकती थी। लेकिन आदम ने उस वाचा की शर्तों का उल्लंघन किया और हमारी समस्त मानव जाति पाप के अभिशाप तले आ गई। शुक्र है, परमेश्वर ने हमें हमारी पापमय स्थिति में बिना आशा के नहीं छोड़ा। इसके बजाय, मानवता के साथ अपने संबंध को संचालित करने के लिए उसने और प्रतिज्ञाओं की, और उन प्रतिज्ञाओं को उसमें सुरक्षित किया जिसे धर्म-विज्ञानी अक्सर "अनुग्रह की वाचा कहते हैं।" वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ़ फेथ, अध्याय 7, भाग 3, अनुग्रह की वाचा के उद्देश्य को इस तरीके से वर्णित करता है:

> परमेश्वर ने अपनी भली इच्छा में दूसरी [वाचा], जिसे सामान्यतः अनुग्रह की वाचा कहा जाता है स्थापित की; जिसमें उसने सेंतमेत ही यीशु मसीह के द्वारा पापियों के लिए जीवन उपलब्ध किया; उनसे उसमें विश्वास की माँग की, जिससे कि वे उद्धार पा सकें।

जब कन्फेशन कहता है कि इस वाचा को "सामान्यतः" अनुग्रह की वाचा कहा जाता है, तो इसका तात्पर्य है कि यह शब्द बाइबल से न आ कर धर्मविज्ञानियों से आता है। लेकिन इस बात से हमें चिंता नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यही बात अन्य शब्दों के लिए भी सही है, जैसे "त्रीएक।" और "अनुग्रह की वाचा" वाले शब्द के द्वारा जो विचार सारंशित किए गए हैं वे मज़बूती से पवित्र शास्त्र पर आधारित हैं।

उनके लिए जिनके पास यीशु में उद्धार वाला विश्वास है, अनुग्रह की वाचा उस नुकसान की भरपाई करता है जिसको हमें आदम के पाप द्वारा सहना पड़ा। और यह मसीह में परमेश्वर की दया के आधार पर क्षमा और छुटकारे को प्रदाने करने के द्वारा ऐसा करता है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

अनुग्रह की वाचा पर हमारा अध्याय चार भागों में विभाजित होगा। सबसे पहले, परमेश्वर की सनातन मनसा में इसकी पृष्ठभूमि का हम पता लगायेंगे। दूसरा, हम दिव्य विधि-विधान के संदर्भ में इसकी उत्पत्ति का वर्णन करेंगे। तीसरा, हम इसके अवयवों का वर्णन करेंगे। और चौथा, हम इसके ऐतिहासिक प्रशासन का सर्वेक्षण करेंगे। आइए परमेश्वर की सनातन मनसा के साथ शुरू करते हैं।

सनातन मनसा

अनुग्रह की वाचा का आधार इतिहास के लिए परमेश्वर की अनंत योजना में समाहित है, जिसे धर्मविज्ञानी उसकी "सनातन मनसा" या "सनातन काल से ठहराई गई योजना" के रूप में संदर्भित करते हैं। परमेश्वर की सनातन काल से ठहराई गई योजना के परिप्रेक्ष्य से, अनुग्रह की वाचा त्रीएक व्यक्तियों के बीच एक सहमित से निकलती है।

इससे पहले कि परमेश्वर ने जगत की सृष्टि की, वह जानता था कि मानवता पाप में गिर जाएगी। और उस वास्तविकता के प्रकाश में, उसने हमें बचाने के लिए एक योजना बनाई। और उस योजना में हमारे उद्धार के विभिन्न पहलूओं के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करते हुए त्रीएक परमेश्वर के तीनों व्यक्ति शामिल थे। सुसमाचारीय परंपराएं उनके द्वारा की गई सटीक प्रतिबद्धताओं पर असहमत हैं। लेकिन हम सब सहमत हैं कि परमेश्वर ने हमारी ओर से मसीह की मृत्यु के द्वारा पापियों को छुटकारा देने की योजना बनाई।

> परमेश्वर ने, संसार की उत्पत्ति में, जगत की उत्पत्ति के समय, पहले ही से योजना बना ली थी कि मनुष्य के साथ क्या करना है ... और इसलिए अपनी सृष्टि में, यह उसके लिए बाद में लिया गया विचार नहीं था कि यीशु मसीह के लिए योजना बनाए; उदाहरण के लिए, कि अंततः वह यीशु होगा जो छुटकारा देने और पाप की इस समस्या से निजात देगा ... और इसलिए हम इसे बाइबल में पढ़ते हैं कि उसने पहले ही से स्त्री के बीज को बचा लिया जो ऐसा व्यक्ति होगा जो सर्प को कुचलेगा, जो पाप का सत्यानाश करेगा। और जब हम कहते हैं स्त्री का बीज, तो उसने यीशु मसीह के जन्म को संदर्भित किया, जैसा कि हम इसे क्रिसमस की कहानी में जानते हैं ... और यह अनंत भूतकाल से परमेश्वर की योजना है।
>
> — प्रो. मूमो किसाओ

इस अध्याय में अपने उद्देश्यों के लिए, हम परमेश्वर की सनातन मनसा के सिर्फ तीन पहलूओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे जो हमारे उद्धार से संबंधित है। सबसे पहले, हम परमेश्वर की मनसा के समय को देखेंगे। दूसरा, हम त्रीएक परमेश्वर के विभिन्न सदस्यों को सौंपी गई भूमिकाओं पर विचार करेंगे। और तीसरा, हम अनुग्रह की वाचा में परमेश्वर की सनातन मनसा की पूर्ति पर ध्यान केंद्रित करेंगे। आइए सबसे पहले इस समझौते के समय को देखते हैं।

समय

इससे पहले कि वह जगत की सृष्टि करता परमेश्वर ने मनुष्यों को हमारे पाप की भ्रष्टता और परिणामों से छुटकारा देने की योजना को बनाया। इफिसियों 3:11 जैसे पदों में यह समय वर्णित है, जो

परमेश्वर के "सनातन उद्देश्य" के बारे में बातें करता है, जिसे यीशु ने ऐतिहासिक रूप से पूरा किया। दूसरा थिस्सलुनीकियों 2:13 कहता है कि हम लोग "आदि से" उद्धार के लिए चुने गए थे। और 2 तीमुथियुस 1:9, 10 उस अनुग्रह के विषय में बोलता है जो हमें "समय की उत्पत्ति से पहले" दिया गया था।

एक उदाहरण के रूप में, इफिसियों 1:3-4 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

> **हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता ... ने हमें जगत की उत्पति से पहले उस में चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों (इफिसियों 1:3-4)।**

यहाँ, पौलुस ने कहा कि हमारा छुटकारा जगत की सृष्टि से पहले निर्धारित किया गया था। और इफिसियों 1:11 में हम पढ़ते हैं:

> **उसी में जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर ... (इफिसियों 1:11)।**

इसमें, और नए नियम में कई अन्य अनुच्छेदों में, परमेश्वर के उद्धार की ठहराई गई योजना यूनानी शब्द प्रूरिज़ो द्वारा संदर्भित है। इस शब्द का आमतौर पर अनुवाद "पहले से ठहराया जाना है।" संदर्भ में, इसका अर्थ है कि उद्धार की परमेश्वर की सनातन काल से ठहराई गई योजना को जगत की उत्पति से पहले पूर्व-निर्धारित या तय किया गया था। प्रूरिज़ो शब्द का प्रयोग रोमियों 8:29, 30 और इफिसियों 1:5 जैसे स्थानों में भी किया गया है।

उद्धार से संबंधित परमेश्वर की सनातन मनसा को विभिन्न ईश्वरीय-ज्ञान की परंपराएं अलग-अलग तरीकों से समझते हैं। कुछ सिखाते हैं कि परमेश्वर ने कुछ विशेष लोगों को नहीं चुना, बल्कि सिर्फ घोषणा की कि जो मसीह को स्वीकार करेगा वह बचाया जाएगा। दूसरे सोचते हैं कि परमेश्वर ने समय के गलियारे में देखा और उन विशिष्ट लोगों को स्वीकार किया जिन्हें वह जानता था कि वे विश्वास में आएंगे। और फिर भी दूसरे मानते हैं कि परमेश्वर ने विशुद्ध रूप से अपने भले अभिप्राय के आधार पर विशेष व्यक्तियों को चुना, और यह कि उनके लिए उसका चुनाव गारंटी देता है कि वे मसीह पर विश्वास लाएंगे। लेकिन हम सभी इस बात से सहमत हो सकते हैं कि पापियों को बचाने के लिए परमेश्वर का निर्णय उसकी सनातन मनसा के हिस्से के रूप में, जगत की उत्पति से पहले किया गया था।

इसके समय के संदर्भ में परमेश्वर की सनातन मनसा को देख लेने के बाद, आइए उन भूमिकाओं की ओर मुड़ते हैं जिन्हें त्रीएक परमेश्वर के सदस्यों ने ग्रहण किया।

त्रीएक परमेश्वर

उद्धार की परमेश्वर की अनंत योजना में त्रीएक परमेश्वर के सभी तीनों व्यक्तियों का कार्य शामिल है। पाप के अभिशाप से पतित मनुष्यों को छुटकारा देने की अपनी इच्छा के कारण पिता ने समझौते की उत्पति की। विशेष रूप से, पवित्र शास्त्र कहता है कि हमें बचाने की यह योजना पिता की थी। उदाहरण के लिए, इफिसियों 3:10-11 में, पौलुस ने सिखाया:

> **[परमेश्वर] का अभिप्राय था कि ... परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान ... प्रगट किया जाए ... उस सनातन मनसा के अनुसार जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी (इफिसियों 3:10-11)।**

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

पौलुस के अनुसार, यह पिता का अनंत उद्देश्य था कि मसीह के माध्यम से हमारे उद्धार के कार्य को पूरा करे। हम इसी बात को इफिसियों 1:4; 2 थिस्सलुनिकियों 2:13; और 1 पतरस 1:20 में भी देखते हैं।

इसी अनुरूपता में, पुत्र अपने सिद्ध ईश्वरीय स्वभाव में सिद्ध मानवीय स्वभाव को जोड़ने के लिए सहमत हुआ, ताकि वह पापियों की ओर से मर सके। इसीलिए 2 तीमुथियुस 1:9 में, पौलुस ने कहा कि समय की उत्पति से पहले हमने पुत्र में अनुग्रह को प्राप्त किया। और हम यूहन्ना 17:4, 5 में भी कुछ ऐसी ही बातों को देखते हैं।

और जिस तरह पिता की सनातन मनसा ने पिता और पुत्र के लिए भूमिकाओं को पहले से ठहराया, इसने पवित्र आत्मा की भूमिका को भी निर्धारित किया। पवित्र आत्मा पुत्र के कार्य को सक्षम और सशक्त बनाने के लिए, और उन लोगों को मुक्ति प्रदान करने के लिए सहमत हुआ जिन्हें पुत्र ने छुड़ाया। 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 में पौलुस ने जो लिखा उसे सुनिए:

> हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगों, चाहिए कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ (2 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

इस पद में, पौलुस ने संकेत दिया कि पिता का चुनाव आदि से था, अर्थात जगत की सृष्टि से पहले। और उस योजना में हम पर उद्धार को लागू करने के पवित्रीकरण वाले कार्य को करने के लिए पवित्र आत्मा की सहमति शामिल थी। इसके अलावा, यहाँ पर "प्रभु" नाम शायद यीशु को संदर्भित करता है, इस तरह त्रीएक परमेश्वर के सभी तीनों व्यक्तियों का उल्लेख है।

> त्रीएक परमेश्वर के सभी तीनों व्यक्ति, पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा, हमारे उद्धार में शामिल थे और हैं। पिता ने अनंत भूतकाल से हमारे उद्धार की योजना बनाई, इसके बजाय कि हम कौन होंगे उसने अपने लोगों को चुना, हमें अनुग्रह में चुना, हमें मसीह में चुना, और पुत्र के साथ वाचा बाँधी, कि पुत्र हमें छुटकारा देने के लिए आयेगा। उसने हमें पुत्र को सौंप दिया, जैसा कि यीशु ने यूहन्ना 17 में अपनी प्रार्थना में कहा, कि पिता ने इससे पहले कि अनंत की शुरूआत होती हमें उसे सौंप दिया — जगत की सृष्टि से पहले। और पुत्र आ गया है, हमारे मानवीय स्वभाव को धारण किया है, उस आज्ञाकारिता की पेशकश की जो हमें पूरी करनी थी लेकिन हम पेश करने में विफल रहे, बलिदान के रूप में उसने स्वयं को पेश किया, और फिर से जीवित हुआ। इस तरह, वह हमारे छुटकारे को पूरी रीति से हासिल करने वाला बन कर आया। पिता योजनाकार है, उद्देश्य-कारक, पुत्र का देने वाला है। पुत्र हमारे उद्धार का हासिल करने वाला है, और पवित्र आत्मा हमारे उद्धार को लागू करने वाला है। वह वही है जो हमारे पत्थर दिलों में जान डालता है, परमेश्वर के वचन के लिए उन्हें नम्र बनाता है, जो हमें मसीह पर विश्वास और भरोसा करने की और इस तरह मसीह से जीवंत रूप में जुड़े होने की योग्यता देता है।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

परमेश्वर की सनातन मनसा को उसके समय और त्रीएक परमेश्वर के व्यक्तियों के संदर्भ में देख लेने के बाद, आइए अनुग्रह की वाचा में इस मनसा के पूरे होने की ओर देखते हैं।

पूरा होना

परमेश्वर की सनातन मनसा उस बारे में उसकी योजना है जो इतिहास में घटित होगा । और अनुग्रह की वाचा उस योजना के हिस्से को पूरा करती है। त्रीएक परमेश्वर के व्यक्ति सदा से जानते थे कि मानवता पाप में गिर जाएगी। और उन्होंने हमेशा से मसीह के जीवन, मृत्यु, दफन होने, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के माध्यम से मनुष्यों को छुटकारा देने का अभिप्राय रखा था। उन्होंने इन बातों को अपनी सनातन मनसा में पहले से ठहराया था। और उन्होंने इन्हें अनुग्रह की वाचा के माध्यम से इतिहास में लागू किया।

उदाहरण के लिए, ध्यान दें, कि पिता ने मसीह में हमारे छुटकारे को अनंत काल में पहले से ठहराया। और फिर पुत्र और आत्मा को अपने कार्य करने के लिए भेजने के द्वारा उसने इस पहले से ठहराई गई योजना को अनुग्रह की वाचा में पूरा किया। उसने पुत्र को मसीहा या मसीह के पद पर नियुक्त भी किया, जो उसके छुटकारे वाले कार्य के लिए आवश्यक था। प्रेरितों के काम 2:36 में, पतरस ने यहूदियों से कहा:

> **परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी (प्रेरितों के काम 2:36)।**

यूहन्ना 5:36 में, यीशु ने स्वयं कहा:

> **जो काम मुझे पिता ने पूरा करने को सौंपा है अर्थात वही काम जो मैं करता हूँ, वे मेरे गवाह हैं कि पिता ने मुझे भेजा है (यूहन्ना 5:36)।**

और यूहन्ना 6:38 में, यीशु ने जोड़ा:

> **मैं अपनी इच्छा नहीं वरन् अपने भेजनेवाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ (यूहन्ना 6:38)।**

स्पष्ट है, जब परमेश्वर का पुत्र, यीशु मसीह, उद्धार के अपने काम को करने के लिए आया, तो वह पिता की योजना को कार्यन्वित कर रहा था। पिता ने पुत्र को अपना शक्तिशाली आत्मा भी बिना नाप कर दिया, जैसा कि हम यूहन्ना 3:34 में पढ़ते हैं। और उसने पुत्र के सिद्ध मानवीय स्वभाव को तैयार किया, जैसा कि इब्रानियों 10:5 में लिखा है।

अपनी भूमिका के लिए, परमेश्वर पुत्र ने भी मानवता को छुटकारा देने के लिए अपने अनंत समझौते को पूरा किया। उसने अपनी ईश्वरीय महिमा पर पर्दा डाला, अपने संपूर्ण ईश्वरीय स्वभाव के साथ संपूर्ण मानवीय स्वभाव को जोड़ा, एक सिद्ध जीवन जीया, और एक प्रायश्चित वाली मृत्यु मरा। फिलिप्पियों 2:5-8 में पौलुस की व्याख्या को सुनिए:

> **मसीह यीशु ... जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी, परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, — हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली! (फिलिप्पियों 2:5-8)।**

यीशु हमें हमारे पापों से बचाने के लिए क्रूस पर मरने के विशेष उद्देश्य के निमित्त देहधारित हुआ। और 2 तिमुथियुस 1:9, 10 संकेत देता है कि उसने परमेश्वर की सनातन मनसा को पूरा करने के लिए पाप में पतित मनुष्यों को यह अनुग्रह प्रदान किया। इब्रानियों 2:13-17 इसे कैसे लिखता है उसे सुनिए:

> [यीशु] ने कहा, “देख, मैं उन लड़कों सहित जिसे परमेश्वर ने मुझे दिए।" इसलिए जबकि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि अपनी मृत्यु के द्वारा वह ... लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे (इब्रानियों 2:13-17)।

यहाँ पर, लेखक ने यशायाह 8:18 की व्याख्या करते हुए कहा है कि पुत्र उन लोगों के लिए प्रायश्चित के रूप में मरने के लिए आया था जिन्हें पिता ने अपनी सनातन मनसा की पूर्ति में, उसे पहले ही से दे दिया था। हम इसी तरह के बयानों को रोमियों 8:3, 4 और गलातियों 4:4, 5 में पाते हैं।

और पवित्र आत्मा भी परमेश्वर की सनातन मनसा में अपनी भूमिका को पूरा करता है। उसने पुत्र के देहधारण को और उसके बाद उसकी माता मरियम में पुत्र के मानव स्वभाव का गर्भधारण करने को सक्षम और सशक्त बनाया, जैसा कि मत्ती 1:20 और लूका 1:34, 35 में अभिलिखित है। पवित्र आत्मा ने क्रूस पर मसीह की मृत्यु को भी सशक्त बनाया, जैसे कि हमें इब्रानियों 9:14 में बताया गया है। और वह मसीह के पुनरुत्थान में कार्यन्वित था, जैसा कि पौलुस ने रोमियों 8:11 में सिखाया।

इसके अलावा, पवित्र आत्मा उद्धार को हममें लागू करने के लिए अपने समझाते को निरंतर पूरा भी करता है। वह हमारी आत्माओं को पुनर्जीवित करता है, जैसा कि हम यूहन्ना 3:5-8, और तीतुस 3:5-7 में देखते हैं। वह हमें पाप का विरोध करने के लिए सशक्त बनाता है, जैसा कि हम रोमियों 7:6 में पढ़ते हैं। वह हमें आत्मिक वरदानों को देता है जो कि हमारे उद्धार का हिस्सा हैं, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 12:11 कहता है। और वह हमारे उद्धार को सुदृढ़ करता है, जैसा कि इफिसियों 1:13, 14 सिखाता है। हम पवित्र आत्मा के कार्य को यह कहते हुए सारांशित कर सकते हैं कि वह त्रीएक परमेश्वर का वह व्यक्ति है जो संसार में पुत्र के उद्धार वाले कार्य को सक्षम बनाता, सशक्त बनाता और लागू करता है। जहाँ कहीं भी परमेश्वर की शक्ति दिखाई जाती है, और जहाँ कहीं भी उद्धार कार्यन्वित होता है, वहाँ पवित्र आत्मा हमारे छुटकारे के बारे में परमेश्वर की सनातन मनसा को पूरा कर रहा है।

हमारे छुटकारे के बारे में परमेश्वर की सनातन मनसा को विश्वासियों के लिए एक बड़ी सांत्वना की बात होनी चाहिए। यह हमें याद दिलाता है कि इतिहास में जिन दुःखद घटनाओं को हम देखते हैं, जिसमें यीशु मसीह की हत्या शामिल है, वे ऐसी समस्याएं नहीं हैं जिनका समाधान करने के लिए परमेश्वर संघर्ष करता है। वे अप्रत्याशित संकट नहीं हैं जिन्हें उसके रचनात्मक समाधानों की आवश्यकता है। इसके विपरीत, ये ऐसी बाधाएं है जिन्हें उसने उद्धार के अपने बड़े उद्देश्यों को हासिल करने के लिए बनाए हैं। इसलिए, कोई फर्क नहीं पड़ता चाहे हमारे जीवन में कुछ भी हो जाए — और कई भयानक बातें होती हैं और होएंगी — परमेश्वर के पास एक योजना है। और वह योजना बिना विफल हुए विश्वासियों को अनुग्रह की वाचा के माध्यम से उद्धार और महिमा में लाएगी।

परमेश्वर की सनातन मनसा में अनुग्रह की वाचा की पृष्ठभूमि पर विचार करने के बाद, आइए दिव्य विधि-विधान के संदर्भ में इसकी उत्पति का पता लगाते हैं।

विधि-विधान

परमेश्वर की सनातन मनसा के विपरीत, जो कि संसार की सृष्टि से पहले निर्धारित था, विधि-विधान, इतिहास में सृष्टि का संरक्षण एवं प्रबंधन वाला कार्य है। इसमें ब्रह्माण्ड के साथ उसके सभी व्यवहार शामिल हैं, जिसमें उसके प्राणियों और उसके कार्यों पर विशेष जोर दिया गया है। इसलिए, जब

हम मानवता के पाप के प्रत्युत्तर के रूप में उद्धार की परमेश्वर की पेशकश के बारे में सोचते हैं, तो हम विधि-विधान की दृष्टिकोण से अनुग्रह की वाचा के पास आ रहे हैं।

हम दो विचारों को देखने के द्वारा विधि-विधान के संदर्भ में अनुग्रह की वाचा को संबोधित करेंगे। सबसे पहले, हम यह पता लगाएंगे कि मानव के पाप ने अनुग्रह की वाचा को कैसे आवश्यक बनाया। और दूसरा, हम अनुग्रह की वाचा के मध्यस्थ के रूप में मसीह की भूमिका पर विचार करेंगे। आइए पहले यह देखें कि हमारे पाप ने कैसे अनुग्रह की वाचा को आवश्यक बनाया।

पाप

ऐतिहासिक रूप से, उत्पत्ति 1:26-28 के सांस्कृतिक अध्यादेश को पूरा करने के लिए मानवता की योग्यता को फिर से बहाल करने के लिए अनुग्रह की वाचा आवश्यक थी। जैसा कि हमने पहले वाले अध्याय में देखा, आदम और हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के निषिद्ध फल को खाने के द्वारा परमेश्वर की वाचा की शर्तों को तोड़ा। और मानवता को अभिशापित करने के द्वारा परमेश्वर ने प्रत्युत्तर दिया। हम लोगों का भ्रष्ट हो जाना, परमेश्वर और अन्य लोगों से अलग हो जाना, और शारीरिक एवं आत्मिक मृत्यु इसका परिणाम था।

मानवता उचित रूप से परमेश्वर के अभिशापों की हकदार है। लेकिन इन अभिशापों ने एक समस्या पैदा कर दी; आखिरकार, अपनी महिमा को प्रतिबिंबित करने के लिए, और ऐसे शासकों के रूप में जो उसके स्वर्गीय राज्य को पूरी पृथ्वी में भरने के लिए विस्तार करेंगे, परमेश्वर ने स्वरूपों के समान मानवता की रचना की। अपनी पतित अवस्था में, हम उन बातों को उसकी संतुष्टि के अनुरूप नहीं कर सकते थे। हमारी भ्रष्टता ने उसे प्रसन्न करने में योग्य होने से हमें रोका, और यहाँ तक कि उसे प्रसन्न करने की इच्छा से भी हमें रोका। हमारे अलगाव ने हमें उसकी उपस्थिति से दूर रखा, और पूरे संसार भर में मानव संस्कृति के निर्माण में सहयोग करने से हमें रोका। और मृत्यु ने हमें उसके राज्य की आशीषों का आनंद लेने से रोक दिया।

लेकिन परमेश्वर ने हमारे दुख की अवस्था में हमें बिना आशा के नहीं छोड़ा। इन भारी समस्याओं के सामने, हमें छुटकारा देना परमेश्वर का समाधान था। उसने आदम और हव्वा के खिलाफ अपनी वाचा वाले दण्ड को नहीं रोका। लेकिन उसने इस पर लगाम लगाई, ताकि वे उसी समय वहीं पर नहीं मरे। और इसके अलावा, उसने कृपालु होकर उन्हें छुटकारा देने की पेशकश की। छुटकारा देने की यह पेशकश सर्प के खिलाफ परमेश्वर के अभिशाप में दिखाई देती है। उत्पत्ति 3:15 में, परमेश्वर ने सर्प से कहा:

> **मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

वाचा वाले दण्ड को क्रियान्वित करने में, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की, कि हव्वा का एक मानवीय वंशज अंततः सर्प के सिर को कुचल डालेगा। प्रकाशितवाक्य 12:9 शैतान के साथ सर्प की पहचान करता है। इस तरह, उत्पत्ति में प्रतिज्ञा परमेश्वर की भविष्यवाणी का तरीका था कि एक मनुष्य अंततः शैतान के पापी राज्य पर विजय प्राप्त करेगा। यह व्यक्ति मानवता को छुटकारा देगा और उन्हें पाप के उत्पीड़न और मृत्युदण्ड से बचाएगा। धर्मविज्ञानी अकसर इस घोषणा को लातीनी शब्द प्रोटोइवैंगलियम, या इसके यूनानी आधारित समकक्ष प्रोटो-यूआंगेलियन से संदर्भित करते हैं, दोनों का ही अर्थ है “पहला सुसमाचार।” और इस पहले सुसमाचार ने ऐतिहासिक अनुग्रह की वाचा की शुरूआत को चिह्नित किया।

लूइस बरखॉफ, जो कि 1873 से 1957 तक रहे थे, उन्होंने अपने सिस्टमैटिक थियोलॉजी, भाग 2, खंड 3, अध्याय 3 में इस वाचा के कृपालु स्वभाव को समझाया है। उन्होंने वहाँ पर जो कहा उसे सुनिए:

> इस वाचा को अनुग्रहकारी वाचा कहा जा सकता है, क्योंकि परमेश्वर हमारे दायित्वों को पूरा करने के लिए एक प्रतिभूति की अनुमति देता है; क्योंकि वह स्वयं अपने पुत्र के व्यक्ति में प्रतिभूति प्रदान करता है जो न्याय की मांगों को पूरा करता है; और क्योंकि उसके अनुग्रह के कारण, जो पवित्र आत्मा के कार्य में उजागर हुआ, वह मनुष्य को अपनी वाचा वाली जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम बनाता है। वाचा की उत्पत्ति परमेश्वर के अनुग्रह में होती है, परमेश्वर के अनुग्रह के आधार पर निष्पादित की जाती है, और परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पापियों के जीवनों में सुनिश्चित की जाती है। पापी व्यक्ति के लिए यह शुरू से अंत तक अनुग्रह ही है।

आदम के साथ शुरूआती वाचा में, मानवता की आशीषें और अभिशाप पूर्ण रूप से हमारे कार्य पर आधारित थे। यदि हम आज्ञापालन करते, तो हम आशीषित किए जाएंगे; यदि हम अवज्ञा करते हैं, तो हम श्रापित होंगे। इसीलिए मानवता के साथ परमेश्वर की पहली वाचा को "कार्यों की वाचा" कहा गया है। लेकिन अनुग्रह की वाचा अलग है। हमारे कामों पर निर्भर होने की बजाय, यह यीशु के कार्यों पर निर्भर है। वह हमारे लिए परमेश्वर की वाचा की शर्तों को पूरा करता है। और फिर वह अनुग्रहकारिता में वाचा वाली अपनी आशीषों को उन लोगों के साथ साझा करता है जिन्हें वह बचाता है।

> हमारे ईश्वरीय-ज्ञान में, हम कभी-कभी कार्यों की वाचा के बारे में बात करते हैं, जिसे परमेश्वर ने आदम के साथ पाप में गिरने से पहले बाँधी थी, और अनुग्रह की वाचा जिसे परमेश्वर ने पापी मानवता के साथ पाप में पतन के बाद उस तरीके से बाँधी जिसमें उन पर, हम पर, यीशु मसीह में महान उद्धार को प्रदान करना है। और इन वाचाओं में अंतर करना महत्वपूर्ण है। इन वाचाओं के साथ कुछ अलग-अलग बातें हो रही हैं, और फिर भी वे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण मौलिक तरीकों से संबंधित भी हैं। उनके बीच के अंतर को समझने के संदर्भ में, मुझे जो बात महत्वपूर्ण लगती है वह है कि इन शब्दों "कार्यों" और "अनुग्रह" पर ध्यान-केंद्रित करना है ... हम कह सकते हैं कि कार्यों की वाचा सिर्फ व्यवस्था के बारे में है, जबकि अनुग्रह की वाचा हमारे लिए सुसमाचार की घोषणा करती है। लेकिन यह कहते हुए भी, उनके संबंध को देखना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने हमारे पतन के बाद कार्यों की वाचा को रद्द कर दिया है। यह ऐसा नहीं है कि परमेश्वर ने कहा हो कि, "ठीक है, पाप वास्तव में ज्यादा मायने नहीं रखता," या "मेरी व्यवस्था का पालन करना वास्तव में ज्यादा मायने नहीं रखता है।" अनुग्रह की वाचा के शुभ समाचार का एक हिस्सा यह है कि मसीह वास्तव में आया है और उसने परमेश्वर की व्यवस्था को संतुष्ट किया है। मसीह ने वह सब किया है जो कार्यों की वाचा की माँग थी। उसने परमेश्वर की व्यवस्था का सिद्धता के साथ पालन किया है और उसे उस व्यवस्था की अवज्ञा करने का दण्ड भी भुगतना पड़ा है। और इसलिए, जब हम अनुग्रह की वाचा में मसीह की ओर देखते हैं, तो हम उसके पास भाग रहे और उस पर ऐसे व्यक्ति के रूप में विश्वास कर रहे होते हैं जिसने वास्तव में वह सब कुछ पूरा किया जिसे मूल रूप से परमेश्वर ने चाहा था कि मानवता पूरा करे।
>
> — डॉ. डेविड वैनड्रूनन

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

विधि-विधान के दृष्टिकोण से, जब हमने पाप किया तो परमेश्वर मानवता को पूरी तरह से दण्डित कर सकता था। लेकिन जैसा कि हमने देखा है, इस बात ने हमारे लिए उसके उद्देश्यों को हासिल नहीं किया होता। दुर्भाग्य से, कार्यों की वाचा ने क्षमा किए जाने हेतु वाचा वाली अवज्ञा के लिए कोई तरीका प्रदान नहीं किया। इससे भी बदतर, परमेश्वर कार्यों की वाचा को यूँ ही नजरअंदाज नहीं कर सकता है, क्योंकि वाचा एक पवित्र शपथ है। और परमेश्वर अपनी शपथ को नहीं तोड़ सकता।

इसलिए, परमेश्वर ने अनुग्रह की वाचा को समस्या के समाधान के रूप में प्रस्तुत किया। हम अनुग्रह की वाचा को कार्यों की वाचा के विस्तार और निरंतरता के रूप में सोच सकते हैं। अनुग्रह की वाचा, कार्यों की वाचा की सभी शर्तों को शामिल करती है, जिसमें दिव्य परोपकारिता, मनुष्य की वफादारी की शर्त, और परिणाम शामिल हैं। इस रीति से, यह कार्यों की वाचा को संरक्षित करती है। लेकिन यह अतिरिक्त दिव्य परोपकारिता, मनुष्य की वफादारी की अतिरिक्त शर्तों, और अतिरिक्त परिणामों को भी प्रस्तुत करती है। और यह इन अतिरिक्त वाली बातों में हैं जो हमारे छुटकारे के लिए एक मार्ग को प्रस्तुत करते हैं।

यह देखने के बाद कि दिव्य विधि-विधान को मानव पाप की प्रतिक्रिया के रूप में अनुग्रह की वाचा की आवश्यकता है, आइए वाचा के मध्यस्थ के रूप में मसीह की भूमिका पर ध्यान दें।

मध्यस्थ

वाचा बाँधते पक्षों के बीच सरल संबंध के साथ, कार्यों की वाचा ने एक विशिष्ट अधिपति राजा-दास संधि के रूप को धारण किया। परमेश्वर अधिपति राजा था, और मानवता दास थी। और आदम ने परमेश्वर के दास लोगों के मुखिया या प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया।

अनुग्रह की वाचा में, इन्हीं पक्षों ने अपने पदों को बनाए रखा। परमेश्वर अभी भी अधिपति राजा था, मानवता अभी भी दास, और कम से कम पहले, आदम अभी भी मानवता का मुखिया या प्रतिनिधि था। लेकिन इन पक्षों के अतिरिक्त, परमेश्वर पुत्र, त्रीएक परमेश्वर का दूसरा व्यक्ति वाचा में इसके मध्यस्थ के रूप में शामिल हुआ। एक मध्यस्थ के रूप में, पुत्र, परमेश्वर के वाचा वाले लोगों के लिए मध्यस्थ करता है। वह हमारे पापों के दोष और दण्ड को अपने ऊपर लेने के द्वारा परमेश्वर से हमारा मेल-मिलाप कराता है। वह हमारी ओर से वाचा के अभिशापों से दुःख भोगकर, वाचा की अखंडता और उसके लोगों के जीवनों को संरक्षित रखता है। इसी तरह, मानवीय वफादारी की वाचा वाली शर्तों के प्रति अपने आज्ञापालन के द्वारा, पुत्र अपने लिए वाचा वाली आशीषों को अर्जित करता है। और फिर उन्हें उन पापियों के साथ साझा करता है, जिन्हें वह छुटकारा देता है।

लूइस बरखॉफ के मन में मध्यस्थ के रूप में पुत्र की भूमिका थी जब उसने अपने सिस्टमैटिक थियोलॉजी, भाग 2, खंड 3, अध्याय 3 में वाचा की "प्रतिभूति" का उल्लेख किया। उनके स्पष्टीकरण के इस भाग को फिर से सुनिए:

> **इस वाचा को अनुग्रहकारी ... कहा जा सकता है, क्योंकि परमेश्वर हमारे दायित्वों को पूरा करने के लिए एक प्रतिभूति की अनुमति देता है; [और] क्योंकि वह स्वयं अपने पुत्र के व्यक्ति में प्रतिभूति प्रदान करता है।**

अदन की वाटिका में तब, जब परमेश्वर ने पहली बार आदम और हव्वा के लिए छुटकारे की पेशकश की — तो पुत्र ने अनुग्रह की वाचा में मध्यस्थता शुरू की जब इसे पहली बार बनाया गया था। और उसने तब से मध्यस्थता जारी रखी है। पुराने नियम के युग के दौरान, उसकी मध्यस्थता ने उसके प्रतिज्ञा किए हुए भविष्य के काम के आधार पर, पुराने नियम के संतों के लिए क्षमा और उद्धार को प्रदान किया। किसी को भी उसके स्वयं के भले कामों या योग्यता के आधार पर कभी बचाया नहीं गया था,

क्योंकि आज्ञाकारिता का कोई भी कार्य हमारे पाप को मिटा नहीं सकता है। और किसी को भी बलिदान किए हुए जानवरों के आधार पर कभी नहीं बचाया गया था, क्योंकि किसी भी जानवर की मौत किसी मनुष्य के लिए पर्याप्त विकल्प नहीं हो सकती है। इब्रानियों के लेखक ने इसे इब्रानियों 10:11 में इस तरह से लिखा है:

> हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते, बार-बार चढ़ाता है (इब्रानियों 10:11)।

जैसा कि पौलुस ने कुलुस्सियों 2:17 में बताया:

> क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया है; पर मूल वस्तुएँ, मसीह की हैं (कुलुस्सियों 2:17)।

> आप जानते हैं, जब आप महसूस करते हैं कि हम लोग मसीह के ऐतिहासिक कार्य के आधार पर बचाए जाते हैं, तो एक प्रश्न जिसे हम बहुत ही सहजता से स्वयं से पूछते हैं, कि पुराने नियम के संतों के बारे में क्या है? क्या वे बचाए गए थे? क्या वे मसीह की इस उपलब्धि के माध्यम से बचाए गए थे, हालांकि यह अभी नहीं हुआ था? या क्या उस समय पर परमेश्वर शायद अलग आधारभूत नियमों के तहत काम कर रहा था? बाइबल हमें बताती है वे अपने विश्वास के द्वारा बचाए गए, उन प्रतिज्ञाओं पर उनका विश्वास जो परमेश्वर ने उनसे किए थे। अब, यह उनके उद्धार के लिए पर्याप्त था, लेकिन किस आधार पर एक पुराने नियम के संत को जिसने उद्धार वाले विश्वास को व्यक्त किया, परमेश्वर उद्धार प्रदान कर सकता था ? उनके लिए अनभिज्ञ, सभी उद्धार के लिए आवश्यक एवं एक ही आधार यीशु मसीह की योग्यताएँ हैं। इस तरह, एक मायने में, वे गुमनाम मसीही थे। उनके जीवनकाल में उनके उद्धार के आधार के बारे में पूरी जानकारी नहीं दी जाएगी, लेकिन हमें आश्वस्त होना चाहिए कि स्वर्ग के नीचे कोई और नाम नहीं है, क्रूस से पहले या बाद में, जिसके द्वारा कोई बचाया जा सकता है।
>
> — डॉ. ग्लेन जी. स्कॉर्जी

पुराने नियम के अध्यादेश वे प्रतीक थे जिन्हें परमेश्वर के लोगों ने विश्वास में कार्यान्वित किया। लेकिन पुत्र की मध्यस्थता वाला कार्य इन अध्यादेशों की शक्ति थी। यही कारण है कि अब्राहम यीशु के दिन को देखकर आनंदित हुआ, जैसा कि हम यूहन्ना 8:56 में पढ़ते हैं। और यही कारण है कि नए नियम में कई सारे लोगों ने दावा किया कि मूसा और भविष्यद्वक्ताओं ने उस कार्य को समझाया जिसे यीशु करने के लिए आएगा। लूका 16:29-31 में लाजर और अमीर व्यक्ति वाले यीशु के दृष्टांत में अब्राहम ने यह दावा किया। फिलिप्पुस ने यही बात यूहन्ना 1:45 में कही। पौलुस ने इसे प्रेरितों के काम 26:22 और 28:23 में कहा। और अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने इसे लूका 24:27 में इम्माऊस के मार्ग पर, और लूका 24:44 में इकट्ठा हुए चेलों को समझाया।

अनुग्रह की वाचा में पुत्र की मध्यस्थता यीशु के रूप में उसके देहधारण, सिद्ध विश्वास और आज्ञाकारिता के उसके जीवन, क्रूस पर उसकी मृत्यु, मृतकों में से उसके पुनरुत्थान, और उसके स्वर्गारोहण के चारों ओर केंद्रित है। अनुग्रह की वाचा के मध्यस्थ के रूप में, उसने हमारी ओर से कार्यों की वाचा को पूरा किया, और गारंटी दी कि हम इसकी आशीषों को प्राप्त करेंगे।

रोमियों 5:12-19 में, पौलुस ने कार्यों की वाचा में आदम की भूमिका की तुलना अनुग्रह की वाचा में पुत्र भूमिका के साथ की। और उसने ऐसा यह दिखाने के लिए किया कि मध्यस्थ के रूप में पुत्र की भूमिका ने कैसे दोनों वाचाओं को पूरा किया। उसने यह समझाते हुए पद 12-14 में शुरूआत की कि आदम के पाप ने समस्त मानव जाति को पाप और मृत्यु के अभिशाप तले फेंक दिया था। और इस अनुच्छेद के अंत में, उसने संकेत दिया कि आदम और यीशु ने वाचा वाली एक जैसी भूमिकाओं को निभाया था। रोमियों 5:14 में, उसने लिखा:

> आदम ... उस आनेवाले का चिह्न है (रोमियों 5:14)।

फिर, रोमियों 5:15-19 में, पौलुस ने तर्क दिया कि वाचा वाले हमारे प्रतिनिधि के रूप में आदम और यीशु का समानांतर लेकिन विपरीत इतिहास था। आदम का इतिहास पाप, विफलता, दण्ड और मृत्यु के इर्दगिर्द घूमा। आदम में, मानवता ने हमारे उपलब्ध वाचा के जिस परिणाम को प्राप्त किया: दण्ड। रोमियों 5:15-19 में, आदम के बारे में पौलुस के वचनों को सुनिए:

> क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे ... एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, ... जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया,... एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ ... एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे (रोमियों 5:15-19)।

आदम में पूरी मानवता दण्डित हुई क्योंकि कार्यों की वाचा पूरी तरह से न्याय के ऊपर आधारित थी। इसने दया और क्षमा के लिए कोई तंत्र प्रदान नहीं किया। इसने मध्यस्थ नहीं प्रदान किया। इसलिए, जब हम एक बार दोषी ठहराए गए, तो हमारे दण्ड को पलटने के लिए कार्यों की वाचा के अन्तर्गत कोई भी कुछ नहीं कर सकता था।

लेकिन इसी अनुच्छेद में, पौलुस ने समझाया कि यीशु वहाँ सफल हुआ जहाँ आदम विफल हो गया था। यीशु के धर्मी कार्यों ने हमें लाभान्वित किया क्योंकि अनुग्रह की वाचा दया और क्षमा के बारे में तंत्र को प्रदान करती है। और वह तंत्र यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र की मध्यस्थता है। परिणामस्वरूप, यीशु का इतिहास आज्ञाकारिता, धार्मिकता, धर्मी ठहराए जाने और जीवन पर केंद्रित है। अब यीशु के बारे में रोमियों 5:15-19 में पौलुस ने जो कहा उसे सुनिए:

> परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात यीशु मसीह के, अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ ... बहुत से अपराधों के कारण ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे ... जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे,,, वैसे ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ ... वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे (रोमियों 5:15-19)।

अनुग्रह की वाचा के अंर्तगत उद्धार इसलिए संभव है क्योंकि यीशु न सिर्फ हमारा प्रतिनिधि है; वह हमारा मध्यस्थ भी है। और यह उसे हमारे व्यक्तिगत अपराध को उठाने में सक्षम बनाता है। जैसा कि हम इब्रानियों 9:15 में पढ़ते हैं:

> मसीह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, — बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनंत मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

और 1 तिमुथियुस 2:5-6 कहता है:

> परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है, जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया (1 तिमुथियुस 2:5-6)।

> अनुग्रह की वाचा के मध्यस्थ के रूप में यीशु की भूमिका वास्तव में आश्चर्यजनक है। मैं कहूंगा, सबसे पहले, कि प्रभु यीशु याजक और बलिदान है जो अनुग्रह की वाचा, या नई वाचा की शुरूआत करता है, यदि आप चाहेंगे, ... और अंतिम भोज पर, सुसमाचारों में प्रभु यीश ने समझाया कि बलिदान वाली उसकी मृत्यु के दो स्तरों पर महत्व है। हाँ, यह एक प्रायश्चित वाला बलिदान था जिसमें हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिए उसने पवित्र परमेश्वर के क्रोध को सहा ताकि हम इससे बच सकें, लेकिन उसने अपनी मृत्यु को एक वाचा की शुरूआत करने वाले बलिदान के रूप में भी वर्णित किया। उसके लहू ने नई वाचा की शुरूआत की, वह मत्ती और लूका में एकदम स्पष्ट रीति से कहता है। इस तरह, उसकी मृत्यु वह बलिदान है जो नई वाचा के युग को शुरू करती है। इस तरह, एक ओर तो, यीशु वह याजक है जो बलिदान चढ़ाता है, और फिर भी आश्चर्यजनक रूप से, वह स्वयं बलिदान है।
>
> — डॉ. चार्ल्स एल. कुआर्ल्स

हमारे पूर्ण ईश्वरीय और पूर्ण मानवीय वाचा वाले मध्यस्थ के रूप में यीशु की भूमिका ने हमारे स्थान पर मरने के द्वारा हमारे पाप का प्रायश्चित करने में उसे सक्षम बनाया। और क्योंकि मानव पाप के लिए यह समाधान सदैव अनुग्रह की वाचा में उपलब्ध रहेगा, इसलिए दिव्य विधि-विधान के लिए कभी भी दूसरी वाचा, वाचा के दूसरे प्रतिनिधि, या दूसरे मध्यस्थ को पेश करने की आवश्यकता नहीं होगी।

अभी तक हमारे अध्याय में, हम ने परमेश्वर की सनातन मनसा और दिव्य विधि-विधान के संदर्भ में अनुग्रह की वाचा पर गौर किया है। आइए अब अपने ध्यान को तीसरे प्रमुख विषय की ओर मोड़ते हैं: वाचा के अवयव।

अवयव

हमने मानवता की उत्पति पर ध्यान-केंद्रित करके ईश्वरीय-ज्ञान वाले मानव-विज्ञान के अपने अध्ययन शुरूआत की। हमारी चर्चा के एक भाग के रूप में, हमने तीन अवयवों के संदर्भ में परमेश्वर के साथ मानवता के मूल वाचा का वर्णन किया जो कि प्राचीन मध्य-पूर्व अधिपति-दास संधियों में समान थे। इन संधियों में शामिल था: दास के प्रति अधिपति राजा की परोपकारिता, वफादारी जिसकी माँग अधिपति राजा ने दास से की, और वाचा के प्रति दास की वफादारी या बेवफ़ाई के लिए परिणाम। इन अवयवों के साथ, प्राचीन मध्य-पूर्व की वाचाएँ राष्ट्रों के बीच बाध्यकारी कानून बन गए।

और मानवता के साथ परमेश्वर की वाचाओं के बारे में भी कुछ ऐसा ही सत्य था। आदम के साथ मूल वाचा — कार्यों की वाचा — हमारे प्रति परमेश्वर की दिव्य परोपकारिता पर आधारित थी। उदाहरण के लिए, उसने हमारे पहले माता-पिता की रचना की, उन्हें सृष्टि के ऊपर अधिकार रखने के लिए नियुक्त

किया, और उन्हें भोजन व आश्रय दिया। परमेश्वर ने हार्दिक याजक वाले और शाही दायित्वों के रूप में मानवीय वफादारी की भी माँग की। अन्य बातों के अलावा, अदन की वाटिका में उसकी सेवा करने की, और पृथ्वी को भरने के लिए उसके राज्य की सीमाओं का विस्तार करने की अपेक्षा परमेश्वर ने आदम और हव्वा से की। और वाचा के परिणामों में बहुतायत के जीवन की आशीष शामिल थी, यदि आदम और हव्वा ने वाचा पर भरोसा रखा और आज्ञापालन किया, और मृत्यु एवं दण्ड का अभिशाप यदि उन्होंने अविश्वास और अवज्ञा की। कार्यों की वाचा के इन सभी अवयवों को अनुग्रह की वाचा बनाए रखती है। लेकिन यह मानवता के पापी स्वभाव एवं मसीह की मध्यस्थता का पता लगाने के लिए उनका विस्तार भी करती है।

हम इनमें से प्रत्येक विस्तारित अवयवों का क्रमानुसार पता लगाएंगे। सबसे पहले हम अनुग्रह की वाचा में दिव्य परोपकारिता पर विचार करेंगे। दूसरा इसके द्वारा अपेक्षित मानवीय वफादारी पर हम गौर करेंगे। और तीसरा हम इसके परिणामों को संबोधित करेंगे। आइए दिव्य परोपकारिता के साथ शुरू करते हैं।

दिव्य परोपकारिता

कई तरीकों में, परमेश्वर की परोपकारिता अनुग्रह की वाचा की सबसे प्रमुख विशेषता है। भलाई और दयालुता ने पुत्र को हमारे मध्यस्थ के रूप में भेजने के लिए पिता को प्रेरित किया और पुत्र को उस कार्य में आनंदित होने के लिए प्रेरित किया। परोपकारिता ने परमेश्वर को वाचा वाली व्यवस्था बनाने के लिए प्रेरित किया जिसमें वह स्वयं उन शर्तों को पूरा करेगा जिन्हें हम पूरा नहीं कर सकते थे, ताकि हमें उपहार दिये जा सकें जिन्हें हम कभी भी अर्जित नहीं कर पाते। यही वह बात है जो सुसमाचार को इतना अच्छा समाचार बनाता है — कि क्षमा और जीवन के अनमोल उपहार हमारे लिए मुफ्त में उपलब्ध हैं। हम एक महान और प्रेम करने वाले परमेश्वर की सेवा करते हैं, जिसने हमारे हेतु भला बनने की एक पवित्र वाचा वाली कसम खाई है।

परमेश्वर की परोपकारिता अनुग्रह की वाचा पहला भाग है जिसे पवित्र शास्त्र प्रकट करता है। उत्पत्ति 3:14-19 में, जब परमेश्वर ने पहली बार कार्यों की वाचा के परिणामों को लागू किया, तो उसने जबरदस्त परोपकारिता दिखाई। कार्यों की वाचा ने कहा कि आदम और हव्वा, और उनके साथ समस्त मानवता को, न्यायपूर्वक मृत्यु दी जा सकती है यदि उन्होंने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाया। लेकिन जब परमेश्वर अपने न्याय को सुनाता है, तो उसने दया, भलाई और कृपा के साथ अपने न्याय को नियंत्रित किया। पहला परोपकार यह था कि उसने मानवता को जीने दिया। उसने हमें फलने-फूलने और पृथ्वी को भरना जारी रखने की अनुमति दी। उसने हमें ज़मीन पर खेती जारी रखने और हमारे अस्तित्व के लिए पर्याप्त भोजन का उत्पादन करने की अनुमति दी। और सबसे महत्वपूर्ण बात, उसने हमारे लिए एक उद्धारकर्ता को भेजने की प्रतिज्ञा की जो पाप के अभिशाप को उलट देगा। जैसा कि उसने उत्पत्ति 3:15 में, सर्प से कहा:

> **स्त्री का ... वंश ...तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा (उत्पत्ति 3:15)।**

जैसा कि आप याद करेंगे, यह दण्ड यह कहने का एक अलंकारिक तरीका था कि, अंततः, एक मनुष्य शैतान के राज्य को जीत लेगा और हमें पाप के अभिशाप से छुड़ाएगा। यह प्रावधान अकेले में एक आश्चर्यजनक परोपकारी उपहार हुआ होता। लेकिन परमेश्वर ने अपनी परोपकारिता को तब और बढ़ा बना दिया जब स्वयं परमेश्वर का पुत्र वह उद्धारकर्ता बन गया। क्रूस पर अपने व्यक्ति में हमारे पाप का बोझ उठाने के लिए यीशु सहमत हुआ। और अपने देहधारण से भी पहले, वह अनुग्रह की वाचा के लिए मध्यस्थ या “प्रतिभूति” के रूप में कार्य करने के लिए सहमत हुआ। इसके अलावा, जब पवित्र आत्मा

हमें विश्वास में लाने के लिए पापी मानवता के मन में कार्य करने के लिए सहमत हुआ, तो उसने भी परोपकारिता में योगदान दिया, ताकि हमें उद्धार प्राप्त हो। पौलुस ने पवित्र आत्मा के कार्य के इस पहलू के बारे में 1 कुरिन्थियों 2:12-14 में बातचीत की है, जहाँ उसने लिखा:

> **हम ने ... वह आत्मा पाया है ... जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जाने जो परमेश्वर ने हमें दी हैं ... परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक से होती है (1 कुरिन्थियों 2:12-14)।**

हमें यूहन्ना 6:63-65 और इफिसियों 2:8, 9 जैसे स्थानों पर इसी के समान विचार मिलते हैं।

बेशक, ईश्वरीय-ज्ञान की परंपराएं हमेशा इस बात से सहमत नहीं होती कि हमें विश्वास में लाने के लिए आत्मा कैसे कार्य करता है। हम दो सड़कों या मार्गों के संदर्भ में मन फिराव वाले आत्मा के कार्य का वर्णन कर सकते हैं। एक मार्ग मसीह को उद्धारकर्ता के रूप में प्राप्त करने को दर्शाता है। और दूसरा उसे तिरस्कार करने को दर्शाता है। सभी सुसमाचारीक मसीही लोगों को सहमत होना चाहिए कि परमेश्वर के विधि-विधान में पवित्र आत्मा लोगों का सामना सुसमाचार से कराने, और इस फैसले का सामना करने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन इस प्रक्रिया में आत्मा की भागीदारी के बारे में कम से कम तीन प्रमुख विचार हैं।

पहला, कुछ ईश्वरीय-ज्ञान परंपराओं का मानना है कि मनुष्य के पास उद्धार के मार्ग को या विनाश के मार्ग को चुनने की स्वाभाविक क्षमता है। इस दृष्टिकोण में, परमेश्वर का विधि-विधान वाला आत्मा का कार्य हमें सुसमाचार का सामना करने को लाने पर केंद्रित है।

दूसरा दृष्टिकोण इस बात से सहमत है कि पवित्र आत्मा हमारे जीवनों को ऐसा चलाता है ताकि हमारा सामना सुसमाचार से हो। लेकिन यह साथ में, यह भी मानता है कि पाप में पतित मनुष्य में सुसमाचार के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की स्वाभाविक क्षमता का अभाव है। पाप में हमारी पतित अवस्था में, हम हमेशा विनाश का मार्ग चुनेंगे। इसलिए, इस दृष्टिकोण में, पवित्र आत्मा पूर्ववर्ती अनुग्रह प्रदान करता है, या उद्धार वाले विश्वास से पहले वाला अनुग्रह, जो उद्धार का मार्ग चुनने के लिए हमें सक्षम बनाता है। एक बार जब हम इस अनुग्रह को पाते हैं, तो दोनों ही मार्ग हमारे लिए खुले हैं, और हम या तो मसीह को स्वीकार करने या अस्वीकार करने को चुन सकते हैं।

तीसरा प्रमुख दृष्टिकोण इस बात से सहमत है कि पवित्र आत्मा हमें सुसमाचार का सामना करने के लिए प्रेरित करता है और यह कि हम में जीवन को चुनने की स्वाभाविक क्षमता का अभाव है। लेकिन, इस दृष्टिकोण में, पवित्र आत्मा उन लोगों के लिए अप्रतिरोध्य अनुग्रह प्रदान करता है जिन्हें बचाने के लिए वह चुनता है। यह अनुग्रह न केवल हमें उद्धार का मार्ग चुनने के लिए सक्षम बनाता है, बल्कि वास्तव में सुनिश्चित करता है कि हम ऐसा ही करेंगे। लेकिन चाहे जो भी दृष्टिकोण हम माने, सभी सुसमाचारीक लोगों को सहमत होना चाहिए कि आत्मा का कार्य हमारे प्रति भलाई और कृपालुता का कार्य है।

अनुग्रह की वाचा के एक अवयवों के रूप में दिव्य परोपकारिता पर विचार करने के बाद, आइए अपने ध्यान को मनुष्य की वफादारी की ओर करते हैं।

मनुष्य की वफादारी

अनुग्रह की वाचा परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता की माँग करती है, ठीक वैसे ही जैसे कार्यों की वाचा ने की थी। वास्तव में, अनुग्रह की वाचा में मनुष्य की वफादारी की शर्तों में वास्तव में वृद्धि हुई है। जब हम इस अध्याय में बाद में वाचा के प्रशासन का पता लगाते हैं तो हम इस विचार को और गहनता

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

से देखेंगे इसलिए, अभी के लिए, हम बस इस बात को स्पष्ट करना चाहते हैं कि अनुग्रह की वाचा पूरे दिल से मनुष्य की वफादारी की माँग करती है।

कार्यों की वाचा के तहत, मनुष्य की वफादारी की शर्त को दो बार पूरा करना पड़ता था। सबसे पहले, इसे हमारे वाचा वाले प्रतिनिधि, आदम द्वारा पूरा किया जाना था। यदि आदम पूरी तरह से परमेश्वर के प्रति वफादार होता, तो उसकी आज्ञाकारिता को मानवता की सामूहिक आज्ञाकारिता के रूप में गिना जाता। और हालांकि आदम इस संबंध में विफल रहा, अनुग्रह की वाचा हमें इस मानक के प्रति जवाबदेह बनाए रखती है। हम इसके न्याय से केवल इसलिए नहीं बच सकते क्योंकि हम अपने अतीत को बदलने में असमर्थ हैं।

दूसरा, कार्यों की वाचा ने हमारी व्यक्तिगत वफादारी की भी माँग की। उदाहरण के लिए, केवल आदम की जाति का भाग होने के रूप में ही हव्वा का न्याय नहीं हुआ। उसे उसके अपने कार्यों के लिए भी दण्डित किया गया। यह दिखाता है कि परमेश्वर ने उसकी व्यक्तिगत आज्ञाकारिता की माँग की। उदाहरण के लिए, यह संभव हो सकता है, कि आदम ने परमेश्वर की आज्ञा को माना होता लेकिन उसके वंशजों में से एक पाप में गिर गया होता। ऐसी स्थिति में, जबकि इस पाप ने पूरी मानवता को दोषी नहीं ठहराया होता, इसने पापी को दोषी ठहराया होता।

लेकिन अनुग्रह की वाचा में एक सुंदर परोपकारिता यह है कि यीशु हमारे वाचा वाले मुखिया और मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। हमारे वाचा वाले मुखिया के रूप में, उसने पहले ही परमेश्वर के प्रति अपनी सिद्ध आज्ञाकारिता के माध्यम से सामूहिक मानवीय वफादारी की शर्त को पूरा किया। और हमारे मध्यस्थ के रूप में, वह हम में से प्रत्येक के स्थान पर खड़ा था, और इस तरह उसने व्यक्तिगत वफादारी की शर्तों को पूरा किया। जहाँ कहीं भी हमने पाप किया, उसने दोष अपने ऊपर लिया। और जहाँ भी वह विश्वासयोग्य रहा, उसने अपनी विश्वासयोग्यता को हमारे लेख में गिना। इसलिए, भले ही अनुग्रह की वाचा में मानवीय वफादारी की शर्तों में वृद्धि हुई है, उनको पूरा करना बहुत आसान हो गया है — क्योंकि यीशु, हमारा मध्यस्थ, उन्हें हमारी ओर से पूरा करता है।

> मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के प्रति अपनी वफादारी के इस मुद्दे के बारे में जब हम सोचते हैं तो पहला स्थान जहाँ से शुरू करना चाहिए वह यह महसूस करना है कि परमेश्वर के अनुग्रह के अलावा जो यीशु मसीह के व्यक्ति में प्रदर्शित किया गया है हम में परमेश्वर के प्रति वफादार होने की योग्यता नहीं होगी। मैं सोचता हूँ कि एहसास करने की शुरूआत करने का वह पहला स्थान यही है कि हमें एक शक्ति या ऐसे अनुग्रह पर भरोसा करने की जरूरत है जो हमारे बाहर हो ... और हमें समझने की जरूरत है कि यदि हम सोचते हैं कि वफादारी हमारे भीतर से आती है उससे हटकर जो परमेश्वर ने यीशु मसीह के व्यक्ति में हमारे लिए किया है, तो हम विफल रहेंगे चाहे भले ही हम वफादार होने की कितनी भी कोशिश कर रहे हों। इसलिए हमें किसी और की वफादारी की ओर देखने की आवश्यकता है। हमें इस तथ्य की ओर देखने की आवश्यकता है कि यीशु मसीह निष्कलंक सेवक था जो व्यवस्था के मौलिक स्वभाव की माँगों को पूरा करने के लिए आया था, और वह वफादारी, और परमेश्वर के प्रति वह भक्ति, और वह राजनिष्ठा, और वह आज्ञाकारिता, और वह सेवा जो अब हमारे लिए गिनी जाती है।
>
> — डॉ. स्टीफन उम

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

धर्मविज्ञानी जॉन वेसली, जो 1703 से 1791 तक रहे थे, उन्होंने अपने उपदेश 6 के खंड 8, के भाग 1 में मानवीय वफादारी की परमेश्वर की शर्त का वर्णन किया: विश्वास की धार्मिकता। जो उन्होंने कहा उसे सुनिए:

> सच पूछिए तो, हमें धर्मी ठहराए जाने के लिए निश्चित और अनिवार्य रूप से आवश्यक, अनुग्रह की वाचा हम से कुछ भी करने की माँग नहीं करती है, बल्कि सिर्फ, उस पर विश्वास करना, उसके पुत्र की ख़ातिर, और जो प्रायश्चित उसने किया, "अधर्मी को धर्मी ठहराता है जो कोई काम नहीं करता है।"

यहाँ, वेसली ने रोमियों 4:5 के लिए सबूत के तौर पर अपील की है कि सिर्फ एक चीज़ जिसकी माँग निश्चित रूप से अनुग्रह की वाचा हम से व्यक्तिगत रीति से करती है वह है मसीह में अपने उद्धार के लिए परमेश्वर पर विश्वास रखना। इस संबंध में, वेसली ने वेस्टमिंस्टर कन्फेशन ऑफ फेथ, अध्याय 7, भाग 3 के साथ सहमति व्यक्त की, जिसे हमने पहले पढ़ा था। यह क्या कहता है उसे फिर से सुनिए:

> परमेश्वर ने अपनी भली इच्छा में दूसरी [वाचा], जिसे सामान्यतः अनुग्रह की वाचा कहा जाता है स्थापित की; जिसमें उसने सेंतमेत में पापियों के लिए जीवन और उद्धार यीशु मसीह के द्वारा प्रस्तुत किया; उनसे उसमें विश्वास की माँग की, जिससे कि वे उद्धार पा सकें।

सुसमाचारीक लोग सहमत हैं कि सिर्फ एक चीज़ जो हमें उद्धार पाने के लिए निश्चितता के साथ करना है, वह है परमेश्वर में उद्धार वाले विश्वास को थामे रखना। और यह पवित्र शास्त्र की शिक्षा के साथ पूर्ण सहमति में हैं। सिर्फ एक उदाहरण के रूप में, प्रेरितों के काम 15:36–18:22 में अभिलिखित, पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा को याद करें। उस यात्रा के दौरान, सुसमाचार प्रचार करने के कारण फिलिप्पी में पौलुस और सीलास को जेल में डाल दिया गया था। लेकिन आधी रात के लगभग, एक भुईडोल ने उन्हें उनके जंजीरों से मुक्त कर दिया। दरोगा ने मान लिया कि वे भाग गए हैं, और स्वयं को मारने वाला था, जब पौलुस उसे रोकने के लिए चिल्लाया क्योंकि कैदियों ने वहीं बने रहने को चुना था। उसके जीवन के लिए उनकी चिंता से दरोगा इतना प्रभावित हुआ कि वह तुरंत मसीही धर्म को अपनाना चाहता था। प्रेरितों के काम 16:30-31 में दरोगा और पौलुस और सीलास के बीच वार्तालाप को सुनिए:

> [दरोगा] उन्हें बाहर लाकर कहा, "हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू उद्धार पाएगा" (प्रेरितों के काम 16:30-31)।

अनुग्रह की वाचा में मसीह की मध्यस्थता इतनी प्रभावकारी है कि यह हमारे लिए परमेश्वर की वाचा वाली सभी शर्तों को पूरा करता है। यहाँ तक कि हमारा विश्वास एक सकारात्मक कार्य के रूप में जो हमने किया है नहीं गिना जाता है। हमारा विश्वास सिर्फ एक माध्यम है जिसका इस्तेमाल परमेश्वर सामान्यतः मसीह की धार्मिकता को हमारे लिए गिनने के लिए करता है। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि परमेश्वर ने वाचा की शर्तों को कम कर दिया है। और वह निश्चित रूप से हम से यह नहीं कहता है कि हम पाप करने के लिए स्वतंत्र हैं। इसके विपरीत, जैसा कि यीशु ने अपने चेलों को यूहन्ना 14:15 में बताया था:

> यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15)।

1628 से 1680 तक रहे अंग्रेज़ प्यूरिटन पादरी वॉल्टर मार्शल ने इस मामले को अपनी पुस्तक द गॉस्पल-मिस्टरी ऑफ सैन्कटिफिकेशन, के "दिशा" या "अध्याय" 8 में संबोधित किया। जो उन्होंने कहा उसे सुनिए:

> कार्यों की वाचा के बंधन से छुड़ाया जाना, यह, वास्तव में, हमारे उद्धार का एक हिस्सा है; लेकिन इसका लक्ष्य यह है, न कि हम पाप करने के लिए स्वतंत्र हो सकते हैं (जो कि सबसे बुरी गुलामी है) बल्कि यह कि हम स्वतंत्रता की शाही व्यवस्था को पूरा कर सकें ... वे किस अजीब तरह के उद्धार की इच्छा रखते हैं, जो पवित्रता की कोई चिंता नहीं करती। वे बच जाएंगे, और फिर भी पाप में पूरी तरह से मरे हुए होंगे, परमेश्वर के जीवन से दूर, परमेश्वर के स्वरूप से वंचित, शैतान के स्वरूप के द्वारा विकृत, उसके गुलाम और स्वयं अपनी वासनाओं के दास, महिमा में परमेश्वर का आनंद लेने के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त। ऐसा उद्धार कभी भी यीशु के लहू से नहीं खरीदा गया था।

हमेशा ऐसे मसीही लोग हुए हैं जो मानते हैं कि जब तक हम यीशु पर विश्वास करते हैं, हमें परमेश्वर की आज्ञा मानने की कोई चिंता नहीं करनी चाहिए। लेकिन पवित्र शास्त्र यह स्पष्ट करता है कि सच्चे विश्वासियों को अभी भी परमेश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण, सच्ची वफादारी को दिखाना आवश्यक है। हम आंशिक रूप से यीशु पर विश्वास को जारी रखते हुए, और आंशिक रूप से परमेश्वर की वाचा वाली व्यवस्था का पालन करते हुए ऐसा करते हैं। हम इसे याकूब 2:22-25; और प्रकाशितवाक्य 14:12 जैसे स्थानों में देखते हैं।

अब, यह सच है कि यदि हम वास्तव में सुसमाचार पर विश्वास करते हैं, तो उद्धार पाने में हम विफल नहीं हो सकते। यीशु का बलिदान यह सुनिश्चित करता है कि हम कभी भी परमेश्वर के अभिशाप के तले नहीं आयेंगे। और उसकी सिद्ध वफादारी यह सुनिश्चित करती है कि हम अनुग्रहकारी उपहारों के रूप में वाचा वाली कई आशीषों को प्राप्त करेंगे — क्षमा और अनंत जीवन जैसी चीज़ें। लेकिन हमारे कार्यों के अभी भी इस और आने वाले संसार के लिए वाचा वाले परिणाम हैं। उदाहरण के लिए, इब्रानियों 12:5-11 सिखाता है कि जब हम पाप करते हैं तो पर हमें इस संसार में प्रेमपूर्वक अनुशासित करता है। इसके अलावा, हमारी व्यक्तिगत वफादारी — भले ही इस संसार में अपूर्ण हो — आने वाले संसार में परमेश्वर से उपहारों को अर्जित करती है। हम इसे मत्ती 6:20; मरकुस 10:21; और लूका 12:33, 34 में देखते हैं।

इसलिए, जब हम अनुग्रह की वाचा में मानवीय वफादारी के बारे में सोचते हैं, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु ने हमारे अभिशाप को पूरी तरह से दूर कर दिया है। जब तक हम उसके प्रति वफादार रहेंगे, हम कभी भी परमेश्वर की वाचा के अनंत नकारात्मक परिणामों को नहीं झेल सकते। लेकिन हम अभी भी पाप नहीं करने के लिए बाध्य हैं। इसी तरह से, हमारी कई आशीषों को मसीह द्वारा खरीदा गया है, और वे हमारी व्यक्तिगत वफादारी पर निर्भर नहीं होते हैं। फिर भी, वाचा हमें अभी भी उसकी आज्ञा मानने के लिए बाध्य करती है।

> यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से हमारा उद्धार हुआ है — उद्धार पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं। कुछ लोग पूछ सकते हैं, "तो फिर उसकी आज्ञापालन के लिए आपके पास क्या प्रेरणा है? प्रेम करने के लिए आपके पास क्या प्रेरणा है?" मैं सोचता हूँ कि प्रेरणा वास्तव में अगले दो पदों में आता है। यह सब इफिसियों 2 से निकलता है, बेशक, जहाँ वह कहता है, ठीक है, "हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए।" इसलिए, यदि हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से हुआ है — मुझे लगता है कि आप बस उसी पर नज़र लगाए रखें — हम भले काम करेंगे। अब, प्रश्न उठता है, यदि हम

> भले काम नहीं कर रहे हैं, तो हम क्या हैं? मैं सोचता हूँ कि यह एक उचित प्रश्न है: क्या हम लोगों का वास्तव में मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार हुआ है?
>
> — डॉ. मैट फ्रायडमैन

अब जबकि हमने दिव्य परोपकारिता और मानवीय वफादारी के अवयवों को देख लिया है, आइए अनुग्रह की वाचा के परिणामों को संबोधित करते हैं।

परिणाम

कानूनी दृष्टिकोण से, अनुग्रह की वाचा कार्यों की वाचा के सभी परिणामों को शामिल एवं उन्हें विस्तार करती है। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 5:12-14 में सिखाया, मृत्यु आदम के पाप का सामूहिक परिणाम है, जैसा कि यह कार्यों की वाचा में था। और हमें अभी भी अपने व्यक्तिगत पापों के लिए भुगतना पड़ता है, जैसे कि आदम और हव्वा ने उत्पत्ति 3:16-18 में किया था। इसके अलावा, अब जबकि मसीह आ गया है, तो वाचा के अभिशाप बढ़ गए हैं। जैसा कि हम इब्रानियों 10:28-29 में पढ़ते हैं:

> जब मूसा की व्यवस्था का न माननेवाला दो या तीन जनों की गवाही पर, बिना दया के मार डाला जाता है। तो सोच लो कि वह कितने और भी भारी दण्ड के योग्य ठहरेगा, जिसने परमेश्वर के पुत्र को पाँवों से रौंदा और वाचा के लहू को जिसके द्वारा वह पवित्र ठहराया गया था, अपवित्र जाना है, और अनुग्रह के आत्मा का अपमान किया? (इब्रानियों 10:28-29)।

ठीक इसी तरह, कार्यों की वाचा की आशीषों को अनुग्रह की वाचा में शामिल एवं विस्तारित किया गया है। कार्यों की वाचा में, यदि आदम और मानवता परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते तो वे पृथ्वी पर हमेशा के जीवन को प्राप्त कर सकते थे। वास्तव में, अदन की वाटिका से उनका बाहर किया जाना उन्हें जीवन के वृक्ष से दूर रखने के लिए डिजाइन किया गया था, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे हमेशा जीवित नहीं रहेंगे। और अनुग्रह की वाचा हमेशा के शारीरिक एवं आत्मिक जीवन के रूप में इस आशीष को पुनर्स्थापित करती है। यह प्रतिज्ञा करती है कि अंततः हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के पृथ्वी वाले स्वर्ग में रहेंगे। जैसे कि यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 21:1–22:5 में पहले से देखा, हमारे पास जीवन के वृक्ष तक पुनर्स्थापित पहुँच भी रहेगी।

लेकिन इससे भी बढ़कर, अनुग्रह की वाचा की तहत हमारा छुटकारा, कार्यों की वाचा में पेश की गई आशीषों को उससे भी अधिक बढ़ाता है। उदाहरण के लिए, छुटकारे की हमारी अंतिम अवस्था में, पाप और उसके परिणामों की संभावना को पूरी तरह से दूर कर दिया जाएगा।

पिछले अध्याय में, हमने अगस्तीन के शिक्षण का उल्लेख किया था, जो हिप्पो के बिशप थे और ईसवी 354 से 430 तक रहे थे। उन्होने मानवता के मूल पापरहित दशा को पोस्से नॉन पिकारे के रूप में वर्णित किया, अर्थात कि मानवता में पाप न करने की क्षमता थी। लेकिन कार्यों की वाचा के तहत, उनके पास पाप करने की भी क्षमता थी, या पोस्से पिकारे। अगस्तीन ने सिखाया कि, मसीह में हमारे छुटकारे के द्वारा, हम अंततः नॉन पोस्से पिकारे की अवस्था में पहुँचते हैं, जो कि पाप करने में असमर्थता के लिए लातीनी भाषा में है। यह अवस्था कार्यों की वाचा के तहत हमारी सबसे अच्छी स्थिति से कहीं बेहतर होगी, क्योंकि यह हमें परमेश्वर की आशीषों में हमेशा के लिए सुरक्षित कर देगी।

इसके अलावा, अनुग्रह की वाचा के तहत, हमारी आशीषों में अब मसीह के साथ मिलन शामिल है। पौलुस इस विचार के साथ इतना व्यस्त था कि उसने अपने संपूर्ण लेखनों में इसे लगातार संदर्भित

किया। “मसीह में,” “मसीह यीशु में,” “प्रभु में” और “उस में” जैसे वाक्यांश उनके लेखनों में सौ से ज्यादा बार दिखाई देते हैं। कुछ धर्मविज्ञानी मसीह के साथ इस मिलन को वाचा वाले प्रतिनिधित्व का विषय समझते हैं। अन्य आत्मिक मिलन के संदर्भ में इसे समझते हैं। और अन्य मानते हैं कि इसमें दोनों शामिल है। लेकिन सभी मामलों में, हमारे मध्यस्थ यीशु मसीह के साथ हमारा मिलन एक व्यक्तिगत संबंध बनाता है जो हमारे जीवन के हर पहलू को बेहतर के लिए बदल देता है। और इसकी आशीषें कार्यों की वाचा में हमें प्राप्त किसी भी चीज़ से कहीं अधिक है। आखिरकार, सिर्फ आशीषों के बजाय जिन्हें हम स्वयं कमा सकते थे, अब हमें वे आशीषें प्राप्त होती हैं जो मसीह स्वयं अपने परमेश्वर के सिद्ध पुत्र और अपने राज्य के ऊपर राजा के रूप में अर्जित करता है।

और निश्चित रूप से, हम उस आशीष को नहीं भूल सकते हैं कि यदि हमें यीशु पर विश्वास है, तो वह हमारे स्थान पर वाचा वाले अभिशाप का भार उठाता है। जब हम पाप करते हैं, हम तब भी परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन करते हैं और इसके नकारात्मक परिणामों को अर्जित करते हैं। लेकिन हमें सजा देने के बजाय, परमेश्वर हमारी सजा को यीशु पर डालता है। और यीशु ने पहले ही क्रूस पर उसका निपटारा कर दिया है। इसलिए, विश्वासियों के लिए, अनुग्रह की वाचा का कोई अभिशाप नहीं है; इसमें केवल आशीषें हैं! इस तथ्य के कारण, पुराने धर्मविज्ञानियों ने कभी-कभी आदम के पाप को “सौभाग्यशाली” या “सुखद” घटना के रूप में संदर्भित किया। निश्चित रूप से उसका पाप दुष्टता था, और परमेश्वर ने ठीक ही उसे दण्डित किया। लेकिन अनुग्रह की वाचा में छुटकारा मानवता की मूल स्थिति से बहुत बेहतर है कि हम वास्तव में आदम के पाप करने से बेहतर स्थिति में हैं।

मध्ययुगीन दार्शनिक धर्मविज्ञानी थॉमस एक्वीनास जिनका जन्म 1225 के लगभग हुआ था और 1274 में मृत्यु हो गई थी, उन्होंने इस तथ्य का वर्णन अपनी सुम्मा थियोलॉजिका, भाग 3, प्रश्न 1, लेख 3, में आपत्ति 3 के उत्तर में किया। उन्होंने जिस तरह से इसे कहा उसे सुनिए:

> कोई कारण नहीं है कि पाप के बाद मानव स्वभाव को कुछ बड़ा क्यों नहीं करना चाहिए था। क्योंकि परमेश्वर बुराइयों को होने की अनुमति देता है ताकि वह उनसे और अधिक अच्छाई को निकाले; इसलिए यह लिखा है: “जहाँ पाप बहुत हुआ, वहाँ अनुग्रह उस से भी कहीं अधिक हुआ।” इसलिए, हम भी ... कहते हैं: “हे आनंदमय दोष, जिसने ऐसे और इतने महान उद्धारक को योग्य बनाया!”

अनुग्रह की वाचा उसके लोगों के साथ परमेश्वर के संबंध में बहुत सारे अद्भुत तत्वों को जोड़ती है कि इसकी आशीषें लगभग असीम हैं। उद्धार की उसकी पेशकश और हमारे मध्यस्थ के रूप में उसके निज पुत्र की नियुक्ति के द्वारा परमेश्वर की परोपकारिता बहुत अधिक बढ़ जाती है। मानवीय वफादारी की वाचा वाली शर्त को हमारी ओर से हमारे मध्यस्थ द्वारा पूरा किया जाता है, और विश्वास, आज्ञाकारिता और पवित्रता में हमारे विकास को मज़बूत करने के लिए हम उसके पवित्र आत्मा को पाते हैं। उनके लिए जो विश्वास करते हैं, वाचा वाले अभिशापों को पूरी तरह से मिटा दिया जाता है, जबकि यीशु की विरासत में हमारे हिस्से के द्वारा वाचा वाली आशीषों को बढ़ाया जाता है। कार्यों की वाचा में आदम की विफलता ने परमेश्वर के सम्मुख मानवता को एक भयानक स्थिति में डाल दिया। लेकिन अनुग्रह की वाचा के माध्यम से जो छुटकारा हमें प्राप्त होता है वह उस स्थिति से कहीं अधिक भला हासिल करता है।

अभी तक, हमने परमेश्वर की सनातन मनसा, दिव्य विधि-विधान में इसकी उत्पत्ति, और इसके अवयवों के संबंध के संदर्भ में अनुग्रह की वाचा पर चर्चा की है। आइए अब अपने अंतिम प्रमुख विषय की ओर मुड़ते हैं: इसका ऐतिहासिक प्रशासन।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

प्रशासन

अनुग्रह की वाचा को विभिन्न वाचा प्रतिनिधियों द्वारा प्रशासित या क्रियान्वित किया गया था। जब हम अनुग्रह की वाचा के ऐतिहासिक प्रशासन पर विचार करते हैं, तो यह समझना महत्वपूर्ण है कि विभिन्न ईश्वरीय-ज्ञान की परंपराएं इन प्रशासनों को अलग-अलग तरीकों से परिभाषित करती हैं। और अक्सर, ये मतभेद इस बात के इर्दगिर्द है कि वे परमेश्वर के वाचा वाले लोगों को कैसे परिभाषित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ विश्वास करते हैं कि केवल विश्वासियों को अनुग्रह की वाचा में शामिल किया गया है। अन्य विश्वास करते हैं कि यह विश्वासियों और उनके बच्चों को शामिल करता है। अन्य लोग इस विषय को एक अलग दृष्टिकोण से देखते हैं। वे वाचा के प्रशासन के एक संचयी अनुक्रम का वर्णन करते हैं, जिसमें शुरू में सभी मानवता शामिल थी और प्रत्येक क्रमिक वाचा के साथ अधिक विशिष्ट बन गए। और अन्य दृष्टिकोण भी हैं।

> जब हम पवित्र शास्त्र के मानक संग्रह में और छुटकारे वाले इतिहास में परमेश्वर के राज्य के बारे में सोचते हैं ... जब आप बाइबल की वाचाओं से होकर कार्य करते हैं और मसीह में उनके चरम बिंदु पर पहुँचते हैं, तो इसके प्रशासन में परिवर्तन हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, विशेष रूप से पुराने नियम में,जब पुरानी वाचा में परमेश्वर इस्राएल देश के माध्यम से अपने उद्धार की योजना को लाता है, वह मुख्य रूप से एक राष्ट्र के साथ काम कर रहा है, वह मुख्य रूप से ईश्वरीय-तन्त्र के संदर्भ में काम कर रहा है, उस राष्ट्र के संदर्भ में एक दृश्यमान प्रतिनिधित्व, जहाँ, उनके द्वारा, वे मसीहा के आने का कारण बनेंगे, प्रभु यीशु के आने का, और आप उस राज्य के प्रशासन को बहुत कुछ एक विशेष स्थान, स्थल, भूमि, विशेष नियम और सरकार आदि से जुड़ा हुआ देखते हैं। और फिर, जब आप मसीह में इसके पूरे होने को सोचते हैं, जब आप राज्य को नई वाचा में पारित करने के लिए लाते हैं, तो कुछ बदलाव हैं। मसीह स्पष्ट रूप से राजा है। वही वह है जो पुराने नियम के चिह्न और प्रतिबिंबों को पूरा करता है। वह दाऊद और मूसा की भूमिका को पूरा करता है। और वही है जो अपने जीवन और मृत्यु, और पुनरुत्थान में, राज्य का उद्घाटन करता है, परमेश्वर के उद्धार वाले शासन को इस संसार में लाता है, और फिर एक अन्तरराष्ट्रिय समुदाय को बनाता है — जिसे हम कलीसिया कहते हैं, "एक नया मनुष्य," यहूदी और अन्यजाती एक साथ — इसलिए वह अब कलीसिया में और उसके माध्यम से शासन करता है। भले ही वह स्वर्ग पर वापस चढ़ गया, वह कलीसिया में और उसके माध्यम से शासन करता है लेकिन उस तरह के ईश्वरीय-तन्त्र में उसी रीति से नहीं जैसा वह इस्राएल के साथ था ... और इस तरह, उनमें से कुछ परिवर्तन तब हुए जब परमेश्वर का शासन पुराने नियम में इस्राएल देश के माध्यम से प्रवेश करता है, कलीसिया में अब मसीह में चरम बिंदु पर पहुँचता है जब कलीसिया राज्य के सुसमाचार को अब संसार के कोनों तक ले जाता है, घोषणा करता है कि, "राजा आ गया है! इससे पहले कि वह फिर से आएगा और उद्धार को अंतिम रूप देगा और साथ में दण्ड की आज्ञा भी देगा, अभी उसके उद्धार वाले शासन में प्रवेश कर लें।"
>
> — डॉ. स्टीफन जे. वेल्लम

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

इस अध्याय में हमारे उद्देश्यों के लिए, हम वाचा के ऐतिहासिक प्रशासन के उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, जहाँ सुसमाचारीय लोग आमतौर पर सहमत होते हैं। विशेष रूप से, हम इसके प्रमुख प्रतिनिधियों या प्रमुखों — आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और यीशु के तहत परमेश्वर की वाचा के विकास को देखेंगे। हम उस तरीके को भी देखेंगे जिसमें इसका ऐतिहासिक विकास मानवता के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की पूर्ति की ओर इशारा करता है।

आदम

जैसा कि हमने पहले देखा, अनुग्रह की वाचा को आदम के साथ उत्पत्ति 3:15 में, उसके पाप में गिरने के तुरंत बाद स्थापित किया गया था। क्योंकि इस समय पर आदम वाचा का प्रधान था, इसलिए धर्मविज्ञानी अक्सर इसे वाचा के "आदम वाले प्रशासन" के रूप में संदर्भित करते हैं। इस प्रशासन ने परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों का फिर से मेल-मिलाप करने के लिए मनुष्यों को तत्काल अवसर प्रदान किया। इस मेल-मिलाप के माध्यम से, हम एक बार फिर संसार भर में परमेश्वर के राज्य को बनाने पर ध्यान-केंद्रित कर सकते हैं। यह लक्ष्य न सिर्फ परमेश्वर द्वारा हमें नाश करने से इनकार करने के माध्यम से स्पष्ट है, बल्कि उत्पत्ति 4:25–5:32 में आदम के विश्वासयोग्य वंशजों के बाद वाले लेखों से भी है। उत्पत्ति 4:25-26 में यह अनुच्छेद कैसे शुरू होता है उसे सुनिए:

> **[आदम की पत्नी] ने एक पुत्र को जन्म दिया और उसका नाम ...शेत रखा, शेत के भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ, और उसने उसका नाम एनोश रखा। उसी समय से लोग यहोवा से प्रार्थना करने लगे। (उत्पत्ति 4:25-26)**

कि मानवता "यहोवा से प्रार्थना करने लगे" दिखाती है कि वे उसके प्रति अपने वाचा वाले दायित्वों को पूरा करने के लिए दृढ़ थे। और जो वंशावली उनके बाद आती है वह दिखाती है कि वे पृथ्वी को परमेश्वर के स्वरूपों और समानताओं से भरने और फलने-फूलने के अपने दायित्व को पूरा कर रहे थे। वास्तव में, ठीक इन्हीं शब्दों "स्वरूप" और "समानता" का उपयोग उत्पत्ति 5:1, 3 में किया जाता है।

नूह

आदम के बाद, नूह के साथ जल प्रलय के बाद वाचा की पुष्टि की गई थी। नूह वाले प्रशासन का उल्लेख उत्पत्ति 6:18 और 8:21–9:17 में किया गया है। जैसा कि हमने पहले अध्याय में देखा था, इस प्रशासन ने आदम के प्रशासन की सभी शर्तों को स्पष्ट रूप से शामिल किया। आपको याद होगा कि उत्पत्ति 6:18 में, परमेश्वर ने नूह से कहा:

> **तेरे संग मैं वाचा बाँधता हूँ (उत्पत्ति 6:18)।**

यहाँ पर "बाँधता हूँ" इब्रानी क्रिया कुम का अनुवाद करता है। यह मौजूदा वाचा की पुष्टि के लिए एक सामान्य शब्द है।

नूह के प्रशासन ने भी, पृथ्वी को जल प्रलय से फिर कभी नाश न करने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा को जोड़ कर वाचा वाली आशीषों का विस्तार किया। परमेश्वर ने भी इस वाचा के चिह्न के रूप में इंद्रधनुष प्रदान किया। इस रीति से, उसने गारंटी दी कि पृथ्वी पर जीवन के लिए हमेशा एक मंच होगा, ताकि उसके विश्वासयोग्य लोग उसकी वाचा वाली आशीषों को खोज सकें।

नूह और उसके परिवार को वही आदेश देने के द्वारा जो उसने आदम और हव्वा को दिया था, परमेश्वर ने मानवता के लिए अपने राज्य के उद्देश्यों की फिर से पुष्टि भी की। उत्पत्ति 9:1 में उसने उनसे कहा:

> फूलो-फलो और बढ़ो और पृथ्वी में भर जाओ (उत्पत्ति 9:1)।

अब्राहम

नूह के बाद, अब्राहम परमेश्वर के वाचा वाले लोगों का अगला प्रमुख प्रतिनिधि था। अब्राहम वाले प्रशासन का उल्लेख उत्पत्ति 15:1-21 और 17:1-21–9:17 में किया गया है। अब्राहम के तहत, वाचा में नूह वाले प्रशासन से शर्तें शामिल थी। और इसने अब्राहम के वंशजों को एक शक्तिशाली राष्ट्र में बदलने और उनके माध्यम से सभी देशों को आशीष देने की परमेश्वर की प्रतिज्ञा जैसी बातों को जोड़ा। इस प्रशासन के दौरान, परमेश्वर ने प्रकट किया कि वह अब्राहम के वंशजों — विशेष रूप से इस्राएल देश के माध्यम से मानवता के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करेगा। विशेष रूप से, उन्हें पृथ्वी भर में परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने का प्रभार सौंपा जाएगा। जैसा कि पौलुस ने रोमियों 4:13 में लिखा:

> अब्राहम और उसके वंश को यह प्रतिज्ञा दी गई कि वह जगत का वारिस होगा (रोमियों 4:13)।

> पौलुस के शब्द — कि वह प्रतिज्ञा या और अब्राहम की वह विरासत पूरे जगत को ले लेगी — वास्तव में, मैं नहीं सोचता कि यह कुछ नया है। वह एक नई व्याख्या की पेशकश नहीं कर रहा है। वह उसी कहानी को जारी रख रहा है जिसे परमेश्वर ने अब्राहम के साथ शुरू किया था। और छुटकारे वाला वाचा का कार्य जिसे परमेश्वर अब्राहम के साथ शुरू करता है वास्तव में पूरे कार्यक्रम को समाहित करता है। और मैं सोचता हूँ कि आप इन सब को उत्पत्ति 12 में एक तरह के बीज-रूप में पा सकते हैं, पहले तीन पदों में। और आप उसके अपने व्यक्ति अब्राहम के लिए की गई विशिष्ट प्रतिज्ञा को देखते हैं: वह एक महान राष्ट्र होगा; उसका बीज ये वाला राष्ट्र बन जाएगा; उसका नाम महान होगा। और अंत में, यह पूरे संसार को समाहित करने के लिए पद 3 में विस्तार करता है: "और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे" इस तरह, हम अब्राहम को पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा तय करते हुए देखते हैं जो एक समय पूरे संसार में फैल जाएगा। और इसी तरह, पौलुस, कलीसिया में आत्मा के उँडेले जाने के द्वारा परमेश्वर के नए कार्य की शुरूआत के साथ, हमने एक नए चरण या छुटकारे की इस योजना के नए कार्य को पूरा होते देखा है।
>
> — डॉ. मार्क सॉसी

मूसा

अब्राहम के बाद वाचा का अगला प्रमुख प्रतिनिधि मूसा था। मूसा वाले प्रशासन की शर्तों को निर्गमन 19–24 जैसे स्थानों में सारांशित किया गया है, और जो लैव्यवस्था और व्यवस्थाविवरण की पुस्तकों में बहुत विस्तार से वर्णित है।

मूसा के साथ, व्यवस्थाविवरण 4:31 और 7:8-13 जैसे स्थानों पर अब्राहम के लिए अपनी प्रतिज्ञाओं की पुष्टि करते हुए, परमेश्वर ने अब्राहम वाले प्रशासन पर और निर्माण किया। उसने इस्राएल देश के लिए संरचना को भी प्रदान किया, और उन्हें अपनी व्यवस्था का पहला व्यापक रूप से संहिताबद्ध संस्करण दिया। और निश्चित रूप से, उसने उन्हें संसार भर में अपने राज्य के निर्माण कार्य के लिए पुन-निर्देशित किया। जैसा कि मूसा ने लोगों को व्यवस्थाविवरण 28:1 में बताया:

> यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएँ, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उसको सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा (व्यवस्थाविवरण 28:1)।

मूसा के दिनों में, पृथ्वी का अधिकांश भाग परमेश्वर के मनुष्य वाले स्वरूपों से भर गया था। लेकिन यह अभी तक परमेश्वर के राज्य के रूप में सेवा करने के लिए तैयार नहीं था क्योंकि मानवता अत्यधिक विद्रोह में थी। इसलिए, मूसा के वाचा वाले प्रशासन के तहत, इस्राएल को परमेश्वर के सत्य वाले समाचार के माध्यम से सभी देशों के लिए छुटकारे को लाना था। और यदि वे सफल होते, तो परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग उसकी ओर से संसार पर राज करते।

दाऊद

मूसा के बाद, वाचा का अगला प्रमुख विकास दाऊद के साथ हुआ। दाऊद वाले प्रशासन का वर्णन 2 शमूएल 7, और भजन संहिता 89, 132 में किया गया है। दाऊद के दिनों में, परमेश्वर ने मूसा वाले प्रशासन की पुष्टि की। लेकिन उसने यह भी उजागर किया कि वाचा की सबसे बड़ी आशीषें दाऊद और उसके वंश के उत्तराधिकारियों के राजशाही के तहत पूरी होगी। जैसा कि हम भजन संहिता 89:3-4 में पढ़ते हैं:

> मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, "मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा" (भजन संहिता 89:3-4)।

यीशु

दाऊद के बाद, वाचा का अगला और अंतिम प्रतिनिधि यीशु — था — और अभी भी है। वाचा के पहले वाले प्रशासनों के विपरीत, जो उनके प्रतिनिधियों के नाम पर रखे गए हैं, यीशु के प्रशासन को आमतौर पर "नई वाचा" के रूप में जाना जाता है। यह नाम मूल रूप से यिर्मयाह 31:31 से आता है, जिसका इब्रानियों 8:8 में हवाला दिया गया है। यिर्मयाह ने बताया कि परमेश्वर अंततः एक स्थायी, अटूट वाचा की स्थापना करेगा, न टूट सकने वाली ऐसी वाचा जिसमें उसके लोग उसकी सभी वाचा वाली आशीषों को प्राप्त करेंगे। और जिस रात यीशु पकड़वाया गया था, अंतीम भोज के दौरान, प्रभु ने स्वयं कहा कि उसकी क्रूस की मृत्यु इस नई वाचा को प्रमाणित करेगी। अपने चेलों के लिए यीशु के वचनों को लूका 22:20 रिकॉर्ड करता है:

> यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिये बहाया जाता है नई वाचा है (लूका 22:20)।

"नई वाचा" वाले वाक्यांश में "नई" के लिए इब्रानी और यूनानी शब्द — खादाश इब्रानी में और कायनोस यूनानी में — इसका अनुवाद "नवीनीकरण" भी किया जा सकता है। और "नवीनीकरण" निश्चित रूप से वह अर्थ है जब पवित्र शास्त्र अनुग्रह की वाचा के प्रशासन के रूप में नई वाचा की बात करता है। विचार यह है कि परमेश्वर वाचा के एक नए प्रशासन के माध्यम से अपने लोगों के साथ अपनी वाचा का नवीनीकृत या पुनः पुष्टि कर रहा है, न कि वह उस वाचा को छोड़ रहा है जिसका पालन करने की उसने शपथ खाई है।

इस वाचा प्रशासन की नवीनीकृत प्रकृति पूरे इब्रानियों की पुस्तक में स्पष्ट है, जो मसीह के तहत नए और अंतिम प्रशासन के साथ अनुग्रह की वाचा के पुराने मूसा वाले प्रशासन विरोधाभास में है।

उदाहरण के लिए, इब्रानियों 5–7 यीशु के नए याजक पद के साथ पुराने लेवीय याजक पद का विरोधाभास करता है — ऐसा याजक पद जो पुराने नियम के याजक-राजा मेल्कीसेदेक की परंपरा को पुनर्जीवित करता है। यह दिखाने के लिए कि नई वाचा पुरानी वाचा से बेहतर होगी इब्रानियों 8 ने यिर्मयाह 31 का उद्धरण दिया। और यिर्मयाह 31 का संदर्भ यह स्पष्ट करता है कि मूल भविष्यवाणी मूसा की वाचा वाले प्रशासन की आशीषों की बहाली और नवीनीकरण के लिए संदर्भित है।

> इब्रानियों 8 में, लेखक आखिरकार "वाचा" शब्द का परिचय देता है, प्रभु यीशु के बलिदान के द्वारा सुनिश्चित की गई वाचा। जो वह कहता है उस पर ध्यान दें कि यीशु ने महान सेवा की है, क्योंकि अब वह एक बेहतर वाचा का मध्यस्थ है, जिसका अर्थ है कि स्वयं वाचा बेहतर है। इसको पिछली वाचा के समाप्त होने के रूप में समझा जा सकता है और, इसलिए, पूरी तरह से नई वाचा के रूप में समझा जाता है। लेकिन दूसरों का मानना है कि यह निरंतरता है, पुराने नियम की वाचा का पूरा होना। लेखक अध्याय 8 में, और उसके बाद, यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के अध्याय 31 में वर्णित वाचा के बारे में बात करता है। वह कहता है कि एक समय आएगा जब प्रभु नई वाचा की स्थापना करेगा। मुझे यह स्पष्ट करने दीजिए कि, यिर्मयाह के लिए, नई वाचा भविष्य में स्थापित होगी। इसलिए, यहाँ पर हम एक विरोधाभास देख रहे हैं: क्या यह एक निरंतरता है या कुछ पूरी तरह से नया? यहाँ दुविधा है। मसीही होने के नाते, हम इस मुद्दे पर अलग-अलग तरह से सोचते हैं। मेरी व्यक्तिगत राय है कि नई वाचा एक निरंतरता है क्योंकि, जैसा मैं इसे देखता हूँ, प्रभु ने सदैव अपने लोगों में — मानवता के पूरे इतिहास मे कार्य किया है — अपने यहूदी लोगों में और बाद में अपने अन्यजाति के लोगों में। हमेशा से अनुग्रह ही से उद्धार हुआ है। अंतर यह है कि, पुराने नियम में, यीशु ने अभी तक अपना बलिदान नहीं दिया था, इसलिए पुराने नियम के लोग इस पर पीछे मुड़कर नहीं देख सकते थे जैसा कि हम कर सकते हैं। अब हमारे पास एक बेहतर वाचा है क्योंकि उद्धार पहले ही पूरा हो चुका है, और हमें असफल होने से डरना नहीं चाहिए, क्योंकि यीशु ने हमारे हर एक पाप के लिए पहले ही क्षमा प्राप्त कर ली है। इसलिए वाचा बेहतर है, लेकिन यह इस अर्थ में भी नई है कि अब व्यवस्था द्वारा कोई बाधाएँ या सीमाएँ नहीं लगाएं गए हैं। हमें उसी बलिदान की आवश्यकता नहीं है; हमें भोजन के बारे में समान नियमों की आवश्यकता नहीं है; हमें वैसे ही समारोहों, आदि की आवश्यकता नहीं है। अब सब कुछ विश्वास के माध्यम से है, यीशु पर भरोसा रखना। इसलिए अध्याय 8 के अंत में, लेखक कहता है कि नई वाचा ने इससे पहले वाली वाचा को जीर्ण कर दिया है और जो जीर्ण और पुरानी है वह जल्द ही मिट जाएगी। इसलिए पुरानी वाचा मिट गई और नई वाचा उसकी निरंतरता है।
>
> — डॉ. एल्विन पाडीला, अनुवादित

नई वाचा की नवीनीकृत प्रकृति इब्रानियों 9:15 में भी स्पष्ट है, जहाँ लेखक ने कहा:

> मसीह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिए हुई है, — बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनंत मीरास को प्राप्त करें (इब्रानियों 9:15)।

जैसा कि यह पद संकेत करता है, “नई” वाचा वाला प्रशासन “पहले” या “पुराने” प्रशासन के साथ निरंतरता रखता है। विशेष रूप से, नया प्रशासन पाप के पुराने ऋण का भुगतान करता है और विरासत की पुरानी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है। और यह अपने मध्यस्थ के माध्यम से इसे पूरा करता है।

नई वाचा में प्रस्तुत महान विस्तार यह है कि मध्यस्थ अंततः अपने लोगों की ओर से वाचा की शर्तों को पूरा करता है। उद्हारण के लिए, लूका 2:21 में उसका अब्राहम वाली वाचा के अनुसार खतना हुआ। जैसा कि हम मत्ती 5:17-19, लूका 24:44, और रोमियों 8:4 में पढ़ते हैं, उसने मूसा की व्यवस्था की पुष्टि की और उसका पालन किया। और उसने मसीहा के दाऊद वाले पद का उत्तराधिकार पाया, जैसा कि मत्ती 1:1-25 में दिखाया गया है।

इसके अलावा, इन सभी वाचा वाली शर्तों का पालन करने के द्वारा, यीशु इनके सभी संबद्ध आशीषों का उत्तराधिकारी बना। हम इसे रोमियों 4:3-25, गलातियों 3:14-16, और कई अन्य स्थानों में देखते हैं। लेकिन सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि यीशु ने ये आशीषें हमारे साथ, उसके विश्वासयोग्य वाचा वाले लोगों के साथ, उनको साझा करने के लिए प्राप्त कीं। मसीह में, जो हमारा वाचा वाला मध्यस्थ और वाचा वाला मुखिया है, हर एक वाचा प्रशासन द्वारा माँग की गई सभी मानवीय वफादारी पूरी होती है, और हम हर एक प्रशासन की प्रत्येक आशीषों को प्राप्त करते हैं।

मसीह ने अभी तक अपनी सभी आशीषों को हमारे साथ साझा नहीं किया है। लेकिन जैसा कि पौलुस ने इफिसियों 1:13, 14 में लिखा, हमारे भविष्य के मीरास के बयाना के रूप में उसने हमें पवित्र आत्मा दिया है। और जब यीशु लौटेगा, तो वह परमेश्वर के पृथ्वी वाले राज्य में हमारे साथ अपनी सभी आशीषों को साझा करेगा। यह तब होगा जब प्रकाशितवाक्य 21:1–22:5 में वर्णित राज्य के निर्माण का मानवता वाला कार्य आखिरकार नए आकाश और नई पृथ्वी पर पूरा हो जाएगा। अभी के लिए, परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिए, और उसकी उपस्थिति का आनंद लेने हेतु हमारे हृदयों को तैयार करने के लिए आत्मा हमें सशक्त बनाता है।

उपसंहार

अनुग्रह की वाचा पर इस अध्याय में, हमने इसके समय को देखने के द्वारा परमेश्वर की सनातन मनसा, त्रीएक परमेश्वर के व्यक्तियों की भूमिकाओं, और अनुग्रह की वाचा में परमेश्वर की मनसा के पूरे होने का पता लगाया है। मानव पाप, और हमारे मध्यस्थ के रूप में मसीह पर ध्यान केंद्रित करने के द्वारा हमने परमेश्वर के विधि-विधान के कार्य के रूप में वाचा पर विचार किया है। हमने दिव्य परोपकारिता, मानवीय वफादारी और आशीषों एवं अभिशापों के परिणामों के रूप में अनुग्रह की वाचा के अवयवों का वर्णन किया है। और हमने आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद और यीशु के तहत अनुग्रह की वाचा के ऐतिहासिक प्रशासन का सर्वेक्षण किया है।

ईश्वरीय-ज्ञान वाले मानव-विज्ञान पर इस श्रृंखला के दौरान, हमने परमेश्वर के पापरहित स्वरूपों वाली हमारी मूल स्थिति से, पतित पापियों के रूप में हमारी शापित स्थिति तक, और यीशु मसीह में हमारे अनुग्रहकारी छुटकारे तक मानवता की दशा का पता लगाया है। हमने यह भी देखा कि इन चरणों के माध्यम से हमें ले जाने के परमेश्वर के उद्देश्य भले और परोपकारी हैं — उसने हमें बचाने के लिए पहले से निर्धारित किए बगैर हमें पाप के परिणामों को भुगतने की अनुमति नहीं दी। और हमारी छुटकारे वाली दशा में, हम सिर्फ उसी स्थान पर हैं जहाँ वह हमें चाहता है ताकि वह उस योजना को पूरा कर सके। हमें अपने पहले माता-पिता के राज्य-निर्माण वाले कार्य को जारी रखने के लिए आत्मिक रूप से सशक्त किया गया है। हमें हर अपराध के लिए माफ़ कर दिया गया है, प्रत्येक वाचा के अभिशाप के दण्ड को स्थगित किया

गया है, ताकि अब जो करना बाकी है वह है उसकी परोपकारिता के लिए उसकी महिमा करना, उसके वाचा के लिए वफादारी में जीवन जीना और नए आकाश और नई पृथ्वी में हमारी अंतिम आशीषों का इंतजार करना है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org